बटेसर काका

बटेसर काका

लघु कथा संग्रह

जगदीश प्रसाद मण्डल

पोथीकेँ तत्वनात् व्यक्तिगत रूपे सोझहा आनल जा रहल अछि... ।

-लेखक

समरपण भाव

समरपण भाव

एक दिस कोनो काजक मूर्तिरूप अछि

दोसर दिस खढ़-माटिसँ गढ़ल...

तैठाम देखिनिहारोकेँ तँ किछु दायित्व बैने जाइ छै..!

एतबे

•••

••

•

पहिल संस्करण : अक्टूबर- 1015

दाम : 251/-

अक्षर संयोजक : उमेश मण्डल

Co-Editor : *Videha 1st Maithili Fortnightly E-Magazine*
http://www.videha.co.in
(ISSN 2229-547X)
Mobile : +918539043668

Distributor :

Pallavi Distributors Ward no 06 Nirmali (Supaul)
Pin code no- 847452
Mobile No- +919572450405

Batesar Kaka : Collection of Short Maithili Stories
by Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर-

क्रियाशील

पनचैतीक कौल्हका समए गाममे बनल। घटना तँ काल्हिये पोखैरक घाटपर भेल, मुदा पनचैती तँ गामक पंचे ने करता, से तँ पोखैरे घाटपर नै बैसल छला जे घटनाक सोझा-सोझी पनचैती करितैथ।

भेल ई जे जीयालालक बारह-तेरह बर्खक बेटी पोखैर नहाइले गेल छलि। टोलसँ सटले पोखैर तँए असगरो-दुसगर लोक नहाइले जाइते अछि।

जीयालालक बेटी श्याम सुन्नैर बाधसँ घास लऽ कऽ घरपर आबि रखलक आ अबेर होइत जाइत देखि अलगनीपर सँ कपड़ा लऽ सोझहे पोखैर नहाइले चलि गेलि।

घाटोक तँ चलती होइ छै, जेहेन दिनक काज तेहेन पोखैर-घाटक चलती। जेठ मास रहने भिनसुरके चलती पोखैरक। ओना जेते गोरेक नहाइक पोखैरक घाट छिऐन, तइमे सभ नै नहेने छला मुदा बेसी लोक नहा नेने छला।

असगरे श्याम सुन्नैर पोखैरक घाटपर पहुँच, ऊपरमे कपड़ा रखि घाटपर बैस पएर माजए लगल। उत्तरे-दछिने घाट। उत्तरसँ दछिन मुहेँ बैस पएर माजैत रहए। तही बीच राजकुमार पाछुएसँ आबि आगूमे ठाढ़ भऽ गेल।

राजकुमारपर नजैर पड़िते श्याम सुन्नैर चौंकि गेल। मुदा मनमे कोनो तरहक शंका नइ भेलै। शंको केना होइतै, एके टोलक- चिन्हरबे लोक, भैया सेहो कहिते अछि। ओना साढ़े एगारह बजेक समए, टहाटही रौद, मुदा सुनसान तँ रहबे करइ। ने कियो दोसरे पोखैरक घाटपर आ ने आने-आन महारपर रहइ। श्याम सुन्नैरक मनमे भेल जे भैरसक राजोकुमार नहाइएले एला अछि, सभ नहाइते अछि। तहूमे आन पोखैर जकाँ घाटोक बँटबारा नहियेँ अछि।

घाटोक बँटबारा केते रंगक होइए। केतौ पुरुख-स्त्रीगणक बीच होइए तँ केतौ जातिक बीच तहिना केतौ टोल-टोलक बीच होइए। मुदा से सभ नइ रहने कोनो शंका श्याम सुन्नैरकेँ नहियेँ भेल।

राजकुमार बाजल-

"श्याम...?"

ओना राजकुमारक स्वर कर्कश नै, नरम-कोमल छल, मुदा 'श्याम' सुनि श्याम सुन्नैरक मन नाचि उठल। मनमे भय आबए लगलै। मुँह झाड़ि श्याम सुन्नैर राजकुमारसँ कहियो बाजल नै छल, मुदा टोकक उत्तरो केना नइ दैत।

बाजलि-

"हँ।"

एक-टकसँ राजकुमार श्याम सुन्नैरकेँ देखि रहल छल। चारूकात नजैर खिड़ा श्याम सुन्नैरक गट्टा पकड़लक। गट्टा पकड़ाइते श्याम सुन्नैरक मनमे आगि पजरए लगल। मुदा आगियो तँ आगि छी, जेकर कोनो सीमा-सरहद नइ छै। मनक आगि, बुधिक आगि, विचारक आगि, देहक आगि, विवेकक आगि इत्यादि...। मुदा से नइ इज्जतक सीमापर अपन रक्षा करबक आगि छेलै। छातीमे ओ दम नइ छेलै जे सीना तानि आगूमे ठाढ़ होइत।

जहिना भाँग-गाँजाक निशाँ ऊपरे मुहेँ चढ़ैत रहैए तहिना राजकुमारक पिशाच मन ऊपर बढ़ैत उग्र होइत गेल।

गट्टासँ अपन हाथ ससारैत राजकुमार श्याम सुन्नैरक बाँहि पकैड़ लेलक। बाँहि पकड़ाइते श्याम सुन्नैरक मन तरसए लगल। मनमे उठलै गाममे ईहाए-टा छुतहर नइ अछि, छुतहरेसँ गाम भरल अछि। एहेन छुतहर-गाममे घरहर बनि जापन केना करब...?

सोच-विचार करैत श्याम सुन्नैरक मन कलैप-कलैप कानए लगलै। मुदा द्रोपदी जकाँ कियो वस्त्र दइबला नै...!

सातो रंगमे श्याम सुन्नैर चेहरा बदलए लगलै। पिशाच राजकुमार श्याम सुन्नैरक बाँहि पकैड़ घाटपर खसा देलक। आ पोखैरमे धँसि नहाए लगल।

घाटपर सँ उठि श्याम सुन्नैर ने कानल आ ने नहेलक। सोझहे दहिना बाँहि तर कपड़ा नेने आँगन दिस विदा भेल।

आँगनक बाट पकड़िते श्याम सुन्नैरक मनमे उठल- आँगनसँ हटल छी, बीचक टोलमे दोसराइत सबहक घर छै, जँ मुँह खोलि कानब तँ अपन माता-पिता थोड़े सुनता, ओ तँ सुनत बीचला गामक लोक। लोको तँ लोके छी। कियो दुखक दवाइ थोड़े करत ओ तँ तिलकेँ ताड़ो बनौत आ केना आरो इज्जत लूटा गाममे बसल रहब, सएह ने सोचत। गाममे कि हमरे संग एहेन दुरबेवहार भेल, सेहो तँ नहियेँ अछि। छगड़ा गोत्रक गामे छी।

गामपर सँ नजैर हटि श्याम सुन्नैरकेँ अपनापर आबि अँटकलै। हम केतए छी?

अपना दिस हिया कऽ देखलक तँ बूझि पड़लै जे जहिना सात तह चमड़ाक तरमे हड्डी रहैए तहिना ने हमहूँ छी। एक तँ गरीब घरमे जनम भेल, तैपर गामक वस्तीमे तीन-घरिया टोलक छी, तीने घर

दियादी-परिवार अछि जे स्कूलक मुँह आँखि नै देखलक, अपनो जे उमेर आ जे समए स्कूल जाइबला अछि, तइमे घास छिलै छी...।

मन आगू बढ़लै। मनो तँ मने छी, नारद जकाँ तीनू दुनियाँ टहलान मारैबला। श्याम सुन्नैरक मन परिवारो आ समाजोसँ हटि अपनापर आबि अँटैक गेलै। अँटकिते मनमे उठलै- ओह! अपन इज्जत जँ लोक अपने नै बँचौत तँ बँचि केना सकत। समुद्रक कातक धारे जकाँ ने समाजोक धार बहैए। जखन समुद्रमे जुआरि उठै छै तखन कात-करोटसँ अबैत धारक गति मध्यम होइत मधुआ जाइए, ओहो जुआरि पाबि उनटे दिस बहए लगैए। आ ताधैर बहैए जाधैर धारक पाछूसँ अबैत धारा प्रवल नै बनि जाइए। मुदा जे समुद्र धार सबहक मातृ-तुल्य जेठ भाए-बहिन बनि अछि ओ केना अपन शील-क्रिया बिसैर जाएत।

अनायास श्याम सुन्नैरक मनमे जगल- ओह! हमरोसँ चूक भेल। जिनगीक अमूल्य रत्न जखन लूटाइए गेल तखन जँ ओकरो अमूल्य रत्न-आँखि किए छोड़ि देलौं!

अपसोचमे श्याम सुन्नैर ओइ डूबा घाट जकाँ डुबि गेल जे ऊपरसँ देखा नै पड़ैत। मुदा आगू मुहेँ मन ससैरते परिवारपर एलै, माता-पितापर एलै। अपने परिवार सन भैयन कक्काक परिवार सेहो छैन। हुनको बेटीक संग हमरे जकाँ ने दिने-देखार इज्जत लूटि लेलकैन। हुनकेटा किए। हुनका सन-सन समाजमे केतेको गोरेकेँ लूटबे केलकैन आ अखनो लूटि रहल छैन।

श्याम सुन्नैरक मन थोड़े असथिर भेल, मुदा लगले थिरैक गेल। थिरैक ई गेल जे सभकेँ अपन-अपन शील-गुण होइ छै, जे अपन-अपन किरियासँ अरजित करैए। ई तँ भेल शील अर्जन, मुदा हमरा संग आकि हमरा सन-सन आनोक संग जे बेवहार होइत आबि रहल अछि, से तँ अपन किरियाक फल नै छी? ओना एहेन वृत्ति खाली

जोरे-जबरदस्तीटा सँ नइ, मेलो-मिलानसँ तँ होइते आबि रहल अछि। जेकरा लोक खेल बूझि खेलाइए।

श्याम सुन्नैरक मन उझैक गेल। उझैक ई गेल जे जहिना किनको बेटी आकि बहिन हम छी, जेकरा समाजोक नजैरसँ खसौलक आ धर्म-कर्म शास्त्रो जेकरा अधम वृत्ति बूझि तियागैक विचार दइए, सेहो नष्ट भेल, तहिना ओकरो माए-बहिनक संग किए ने हुअए। मुदा एहेन विचार अनुचित छी, जे अबोध-अज्ञानी श्याम सुन्नैरक मनमे नै उठि पौलक। उठैक चाहै छेलै जे जे वृत्तिकेँ समाज अधला बूझि दुसैए, जँ एहेन वृत्ति समाजमे होइए तइले समाजकेँ समाज बनि चलैले किछु चिक्कन बाट बनबए पड़तै। ओ के करत?

राजकुमार अपनाकेँ घाटपर असगर देखि, निसचिन्तो-सँ-निसचिन्त भऽ गेल। जँ कोनो चोरक घर बौसे ने पकड़ाएत तँ ओ चोर भेल केना? तहूमे कानून-कायदासँ चलैबला शासनमे तँ ई मोटा आरो भारी अछि। चोरी केनिहार चोर, वस्तु चोरेलक तँ चोरेलक मुदा जाबे ओकरा चोर साबित नइ कएल जाएत, चाहे साबित नइ हएत, ताबे चोरक रूप केना देल जाएत। मुदा समाज तँ से नइ छी, ओकरामे जीवन्तता छै।

राजकुमारक मन मिसियो भरि विचलित नइ भेल जे अपराध केने लोक अपराधी बनैए आ अपराधी बनि समाजकेँ मुँह देखब आकि देखाएब केना, दुनू तँ अधला भेबे कएल। राजकुमारक मनमे एहेन विचारे किए उठत जे अधला केलौं जइसँ मुँह देखबैबला नइ रहलौं। सालक-साल, दिनक-दिन चलैबला परम्परा कहियौ आकि बेवहार, ओ तँ समाजमे ऐछे। तेकर अनेक कारणो छै। कारणोक कारण छै जे एक दिस अधला वृत्तिकेँ अधला बूझि कियो थूक फेकैए तँ कियो एहनो तँ ऐछे जे खेल बूझि खेलौड़ करैए। एहने खेलौड़ करैबला राजकुमारो।

राजकुमारेटा किए कहबै अनुलोम-प्रतिलोम पद्धैतक क्रिया किए ने कहबै...।

आँगन आबि श्याम सुन्नैर घरक छप्परपर कपड़ा फेकि, ढेकी-घरक खुट्टामे ओडैठ मन मारि मुड़ी खसा बैसि रहल। बाड़ीसँ अबैत श्याम सुन्नैरक माए- सुधीराक नजैर अँगनाक मुहथैरे लगसँ पड़लैन। श्याम सुन्नैरपर नजैर पड़िते सुधीरा बजली-

"बुच्ची, नहा कऽ एलह?"

माइक बात सुनि श्याम सुन्नैरक छाती छहोंछित भऽ गेल। मन तड़ैस उठलै- शील हरण! छाती दरैक गेलै। दरकिते कमला धार जकाँ दुनू आँखि बहऽ लगलै।

नहाइ-खाइ बेर देखि सुधीरा सुखाएल ठौहरी चुल्हि लग पटैक ठाढ़े घूमि श्याम सुन्नैरक बहैत दुनू नयन-धार देखि बजली-

"बुच्ची, हमरा अछैते तोहर आँखि किए बहै छह?"

माइक बात जेना श्याम सुन्नैरक छातीकेँ छेद देलक। बकार नइ फुटलै, मुदा आँखि उठा माएकेँ पएर लगसँ चाइन धरि खिड़ा कऽ देखि नजैर निच्चाँ खसा लेलक। बाजल किछु ने।

माए पुछलकै-

"एना मन खसल किए छह?"

माइक बात सुनि श्याम सुन्नैरक मनमे चुल्हिपर चढ़ल वर्तनक पानि जकाँ तरसँ बुमकौला तँ छुटै मुदा ऊपर उबैत-अबैत फुटि-फुटि असथिर भऽ जाइ, जइसँ मुहसँ बाहर निकलबे ने करइ। ओना आँइखेटा नै मुहोँ आ मुँहक सुरखियो अपन बेथा-कथा बाजिये रहल छेलै।

दोहरबैत सुधीरा बाजली-

"बुच्ची, हम माए छिअह, हमरासँ कोनो बात किए छिपबै छह?"

माइक बहैत धारमे श्याम सुन्नैर भँसियाइत बाजलि-

"माए, नहाले पोखैर गेल छेलौं। घाट खाली छेलै। कियो केतौ ने छेलै, तही बीच रजकुमरा आएल। नहाइले आएल कि ओहिना आएल से ते ओ जानए मुदा ओ...!"

'ओ' कहि श्याम सुन्नैरक मुँह बन्न भऽ गेलै। बेटीक बात सुनि माएकेँ कोनो अरथे ने लगलैन। बेटीक मुँहक अधकचरा गप उत्तेजित कऽ देलकैन, बजली-

"एना किए मुड़ी छोपि कऽ बजै छह। जे भेलह से साफ-साफ खोलि कऽ बाजह।"

माइक बात सुनि श्याम सुन्नैरोक हूबा जगल। बाजल-

"माए, घाटपर...!"

'घाट' सुनि सुधीराक मन चौंकलैन। मनमे पैछला एकटा घटना उठि एलैन। छह मास पहिने वएह राजकुमार ओही घाटपर सोनेलालक बेटीक इज्जत-आवरू लूटि नेने रहइ। हो-न-हो एहने किरिया ने तँ हमरो बेटीक संग केलक। मनमे अबिते विचारक झाँउ उठलैन, बजली-

"बुच्ची, सत्-सत् बाज, जे कियो किछ...?"

माइक बात सुनि श्याम सुन्नैर, छातीकेँ पथ्थर करैत बाजल-

"माए, रजकुमरा घाटपर खसा देलक।"

'घाटपर खसा देलक' सुनि सुधीराक मनमे आगिक जुआर उठि गेलैन। बड़बड़ाए लगली-

> "की हमर बेटी ओकर ठकदरूआ छी जे हँसी-मजाक केलक? किए हमरा बेटीक देहमे भीड़ल? जनिपिट्टाकेँ सतबन्हना बाढ़ैनसँ झाँटबै... ।"

बरबड़ाइत पति लग पहुँच सुधीरा बजली-

> "गाममे अन्हेर होइए। केकरो इज्जत-आवरू बाँचब कठिन अछि।"

खोलि कऽ अपन बात नइ बाजि झँपले-तोपल बजली मुदा गामक बेवहारसँ जीयालाल बूझि गेला जे श्याम सुन्नैरक संग जरूर किछ अन्याय-अनीति भेल...! विस्मित भऽ गेला- न्याय के करत?

...अपना ओतेक शक्ति अछि जे गामक अन्याय-अनीतिक कोन बात जे अपन परिवारोक अन्याय-अनीतिकेँ रोकि सकब।

मुदा लगले जीयालालक मनमे उठलैन- चुपचाप अन्यायकेँ सहियो लेब केहेन हएत?

...आइ जेहेन अन्याय भेल, काल्हियो तँ हेबे करत। जखन दिनो-दिन अहिना हएत तखन मनुख आ पशुमे की अन्तर भेल।

तही बीच सुधीरा दोहरबैत बजली-

> "मनक बेथे बेटी नहेबो ने केलक आ अन्नो-पानि गरहन नै करए चाहैए!"

पत्नीक बात सुनि जीयालालक दुनू आँखिसँ नोरक धार निच्चाँ मुहेँ बहऽ लगल। तरसैत, टघरैत, तड़पैत जीयालालक मन अगम पानिमे डुमल डुब्बा जकाँ भऽ गेल। अनायास मुहसँ बहराएल-

> "हे भगवान जनिहऽ तूँ।"

मुदा पोखैर हौउ कि इनार आकि धार हौउ कि समुद्र, पानिक ऊपरसँ जे अवाज जेते जोरसँ सुनि पड़ै छै तेते पानिक तरोक अवाज सुनाइ दइ छै। हमर बात सुनत के? समाजो तँ समाजे छी। सभ किछु समुद्र जकाँ अपना पेटमे रखने अछि। ओही समाजक बीच ने पंच-परमेसर सेहो बास करै छैथ। जरूर हमर न्याय हएत।

मुदा लगले मन हहैर-हहैर निच्चाँ खसए लगलैन। सोनेलालोक बेटी संग तँ अन्याइए भेल छल, गामक लोक मुँह तकैत रहि गेल। केकरो मुहसँ एतबो नै निकललै जे जँ समाजमे अन्याय-अनैतिक बेवहार हएत तँ समाज नष्ट हएत। टुटैत-टुटैत एहेन टुटान टूटि जाएत जे समाजक चीन-पहचीन मेटा जाएत…।

गुन-धुनमे पड़ल जीयालालक मनमे उठल- सोनेलाल भाय एकघरिया छैथ, जहिना जाति तहिना दियादवादमे, जखन कि रजकुमरा सभ तरहेँ बीस अछि। झमटगर दियादोवाद आ जातियो छै, तैपर सेरो-सम्पैत तँ छइहे। समाजक लोक ओकरा किछु थोड़े कहलक। तँए ने सोनेलाल भाय मुँहचुरू भेल गाममे छैथ!

लगले जीयालालक मन अपना दिस बढ़लैन। हमहूँ तँ सएह छी। मुदा जिनगी तँ संघर्षेमे नुकाएल अछि। जँ ओकरा छोड़ि जीबए चाहब तँ एको दिनक कोन बात जे एको क्षण नै जीब सकै छी। मनमे हूबा जगलैन।

हूबा जगिते जीयालाल पत्नीकेँ कहलखिन-

> "बुच्चीकेँ कहियो जे अन-पानिक कोन दोख छै जे तियागत। भगवान हमरो जनम पुरुखेक कोखिमे देने छैथ, जाइ छी समाजकेँ कहबैन।"

पतिक विचार सुनि सुधीरोक मन उत्साहित भेलैन। उत्साहित होइत श्याम सुन्नैरकेँ कहलखिन-

> "बुच्ची, उगलाहा सभ देखै छथिन, तँए जँ केतौ उगल हेता ते हमरो निसाफ करबे करता। तइले अन्ने-पानि तियाग केने की हेतह। अहिना जिनगीक गाड़ी गुड़कैत चलै छै। तहूमे अपने समाजकेँ कहए जा रहल छैथ, कखन घुरि कऽ औता कखन ने, तँए मालो-जाल देखए पड़तह।"

श्याम सुन्नैरक मनक बेथा किछु कमल। ओना समए बीतने घाओक चोट कमैए, मुदा सभठाम कमिते अछि सेहो बात नँ नहियेँ अछि। केतौ कमबो करैए आ केतौ बढ़बो करैए। मुदा से नइ, ऐठाम बेटीक बेथा कनी कमल। ढेकी घरसँ निकैल श्याम सुन्नैर, पोखैर छोड़ि कलेपर नहाइले गेलि।

घरसँ निकलिते जीयालालक मन चोन्हिया गेलैन। चोन्हिया ई गेलैन जे समाज तँ समाज छी, मुदा किछु गनले-गूथल लोक छैथ जे गामक पनचैती करै छैथ। सेहो पनचैती की करै छैथ, किछु राजनीति करै छैथ आ किछु बेपार।

लगले जीयालालक विचार ठमैक गेलैन। ठमैक ई गेलैन जे समाजक लोको तँ लोके छिया। घरसँ भागल सन्यासी जकाँ कोनो मतलबे ने गाम-समाज-दुनियासँ छैन। दुनियाँ झूठ छी। सभ अपने-अपने काजे बेहाल अछि, किए कियो केकरो दिस ताकत। सौनक मेघ जकाँ जँ ठनकत तँ आरो साहोर-साहोर करैत दुनू हाथ माथपर रखि नीति बघारता जे ठनका ठनकै छै ते लोक अपना मत्थापर हाथ लइए।

बढ़ैत डेग जीयालालक फड़फड़ेलैन। जहिना चिड़ै दुनू पाँखि फड़फड़ा उठैए तहिना जीयालालोक मन फड़फड़ाएल रहैन। फड़फड़ाएल ई रहैन जे जिनगीकेँ केतौ-ने-केतौ धरतीपर खुट्टा गाड़ि अपनाकेँ तइमे बान्हि चलए पड़त। जँ से नइ चलत तँ जिनगीक उचित मोल नइ भऽ सकै छै। जइले जरूरी अछि जे कोनो समस्या उठने ओकरा सोझे ठेल कऽ कतबाहि नइ कऽ नीक-बेजाइक कसौटीपर

कैस ओकरा ठेली। जाबे जिनगीकेँ धरतीपर रोपि ठाढ़ नै करब ताबे जिनगी ठाढ़ केना हएत।

जीयालालक मनमे उत्साह जगलैन। समाज दिस डेग बढ़ौलैन।

जीयालाल मने-मन विचारलैन जे गाम-समाजमे घरे-घर सभकेँ अपन दुखनामा कहबैन, की करता से ओ जनता मुदा समाज होइक नाते जँ अपन बात समाजकेँ नइ कहबैन सेहो नीक नइ बूझि पड़ैए।

पाहि लगा-लगा जहिना खेत जोतल जाइए, धान रोपल जाइए, जइसँ केतौ छुट-छाट नइ होइए तहिना जीयालाल सौंसे गाम कहब शुरू केलैन। घरक बगलक जे घर रहैन तैठाम पहुँच दरबज्जापर सुतल घरवारीकेँ जगबैत बजला-

"जीतू भाय, जीतू भाय, नीन तोड़ू।"

ओना जीतू भाय जगले छला मुदा आँखि बन्न छेलैन। जीयालालक बात सुनि आँखि तकैत बजला-

"एते रौदमे किए एलौं?"

जीतू भाइक विचार सुनि जीयालालक मन, रौदमे पड़ल घी वा गड़ीक तेल जहिना पघिलऽ लगैए तहिना पघिल गेलैन। पघिलल मने बजला-

"भाय, बिपैतमे पड़ि गेल छी तँए एलौं।"

अपने चौकीपर सँ उठैत जीतू भाय जीयालालकेँ बैसबैत पुछलखिन-

"केहेन बिपैत पड़ि गेल अछि?"

जीयालाल-

"भाय, गाममे मुँह देखबै जोकर नइ रहि गेलौं। की कहब, बिआह करै जोकर समरथ बेटीक संग पोखैरक घाटपर रजकुमरा...।"

कहि जीयालाल हवोढकार भऽ कानए लगला। कोसी-कमला धार जकाँ दुनू आँखिसँ नोर टघरए लगलैन, दुनू आँखि ललियाए लगलैन, छाती दलकए लगलैन। बकार बन्न भऽ गेलैन।

आशुतोष दैत जीतू भाय कहलखिन-

"जीया भाय, आइए नइ, सभ दिनसँ मनुख-मनुखक संग अन्हेर करैत आबि रहल अछि, अखनो करैए आ कहिया तक करैत रहत सेहो ठीक नइ अछि। तखन तँ भेल जे एहेन अन्हा गाममे तँ कन्हा बनि रहै पड़त।"

जीतू भाइक बात सुनि जीयालालक मन थकमकेलैन। दुखक जे धार बहैत रहैन ओ जेना ठमकलैन। बजला-

"सहए भाय।"

'सएह' सुनि जीतूओ भाइक विचारक प्रवाह बदललैन। बजला-

"जीया भाय, अहीं-हमहींटा समाजमे नइ छी, जेकरा संग अनीति-अन्यायक संग अन्हेर नै होइए। जेना अहाँक संग भेल अछि तेना तँ नइ मुदा देखबे करै छी जे तीन बीघा खेत छेलए, लाठी हाथे मनमोहना जोइत लेलक। ने गाममे कियो किछ केलक आ ने कोट-कचहरी, थाना-पुलिस। साँपक मुँह साँप चटै छै। देखबे करै छी, तहिना थाना-पुलिस कोटक आदेशक नामो लगबैत रहल आ कोट-कचहरी, कागज अपना लग रखि किछु बजबे ने करैए। तीस बरख भऽ गेल, अछैते चीजे अन्न बेतरे दुख कटै छी।"

जीतू भाइक बात सुनि जीयालाल मने-मन विचार करए लगला। जैठाम धन-धर्म सभ लूटिनिहार लूटि रहल अछि आ लुटनी-कुटनी चलि रहल अछि, तैठाम जिनगी जीब असान अछि, मुदा उपए?

चौकीपर सँ उठैत जीयालाल बजला-

> "भाय, सौंसे समाजकेँ जँ नइ जना देबैन तँ काल्हि दोखी बनब। दोखी ई बनब जे जिनका नइ कहने रहबैन, ओ ताना मारि कहता जे अहाँ हमरो तँ एको बेर नइ कहलौं।"

जीयालालक विचार जीतूओ भायकेँ जँचलैन। उठि कऽ कनी आगू तक अरियातैत कहलखिन-

"नीक विचार अछि। भगवान भल करैथ।"

टोले-टोल, घरे-घर, राजकुमारक परिवार छोड़ि, जीयालाल भरि दुपहरिया रौदमे घूमि-घूमि सभकेँ अपन दुखनामा सुना निर्णए करैले कहलखिन। संगे ईहो कहलखिन जे काल्हि समाजक बीच पनचैती बैसाएब, जइमे समलित भऽ अपन विचार दी।

ओना समाजो तँ समाजे छी आ लोको तँ लोके छी। कियो घटनोसँ फाजिल विचार देलखिन, तँ कियो घटनाकेँ अनदेखी करैत सेहो विचार देलखिन।

समलित विचार आ छुट्टा विचार सेहो तँ समाजमे ऐछे। छुट्टो विचार तँ छुट्टे छी, करवनो एक पक्षक पक्षमे विचार देब तँ करवनो दोसर पक्षमे। आ सभसँ लाजमी बात ई अछि जे देखलोकेँ बिनु-देखलाहा आ सुनलोकेँ बिनु-सुनलाहा कहनिहार बेसी अछि। मुदा जे अछि, छी तँ समाजे। ने एक गोरेक सुधारने सुधरत आ ने एक गोरेक बिगाड़ने बिगड़त। ओइले तँ लोककेँ महजाल बनबए पड़ै छै।

दियारी पावैनमे जहिना घर-अँगनाक काज सम्हारै दुआरे पोखैर-इनारक काज लोक समैसँ करऽ चाहैए, तहिना भेल।

बेर टगि गेल छल, सुरुजमे लालिमा सेहो पकड़ए लगल छल मुदा रौतुका कोनो सिरखार नइ जगल छल। टोलक कोन बात जे गामेक जनिजाति अपन-अपन खानगी चापाकलकेँ भंगठल कहि सड़कक कातक आ चौक-चौराहा परहक कलपर सबेर-सकाल पानि भरैले जुटए लगली। जेना अपन सभ काज बिसैर-बिसैर सभ निचेनसँ बाल्टीन नेने पहुँचल छेली तहिना स्थिति बनि गेल। स्त्रीगणक ई टटका जुटान भेल। जुटानो केना ने होइत, कोनो कि छोट-छीन घटना भेल जे नइ हएत।

चौकक कलपर रामपुरवाली आ किसुनपुरवालीक बीच कहा-कही होइत दुनूकेँ पकड़ा-पकड़ी भऽ गेल। पकड़ा-पकड़ीक कारण भेल जे राजकुमारक सासुर रामपुर आ जीयालालक सासुर माने श्याम सुन्नैरक मात्रिक किसुनपुर। कलक चबुतरापर दुनू गोरे अपन-अपन बाल्टीन रखि दुनू-दुनूक बाँहि पकड़ने। ललैक कऽ किसुनपुरवाली बाजलि-

> “एहेन-एहेन छुतहर पुरुखकेँ माथक केश काटि कारीख-चुन लगा सौंसे गाम टहलौल जाएत तखन छुदरपना छुटतै।”

किसुनपुरवालीक बात जेना रामपुरवालीकेँ करेजमे छुबि देलकै तहिना पाशा पलटैत राजकुमारक पक्ष लैत बाजलि-

> “केकरो इज्जतकेँ गामक मौगी-मेहैर कोनो इज्जत बुझैए, जे मनमे अबै छै से पोखैर-इनारपर ढकैंए!”

अही बीच दुनूकेँ पकड़ा-पकड़ीक संग झोंटा-झोंटौबैल हुअ लगल। ओना नव-पुरान बहुतो जनिजाति कलपर छेली मुदा दोसर-तेसर खाली मुँह तकैत जे फंल्ली किछु बजती तखन ने बाजब। आ बुढ़-पुरान जे रहैथ ओ नव-नौतारि कनियाँ लग अधला बात मुहसँ

निकालऽ नइ चाहै छेली तँए चुप। तहिना नव-नौतारि बुढ़-पुरानक धाखे, किछु ने बजैत।

दोसर दिस गामक नवयुवकक बैसार राजकुमार करौलक। खेनाइ-पीनाइक सभ जोगार रहबे करइ। खाइ-पीबैक संग जीयालालेक गप-सप्प चलल। गप-सप्पक क्रममे राजकुमारक पितियौत भाए बाजल-

"गाममे पनचैती के करत?"

ओना जीयालालकैँ समाजक लोक आँखिक नोर नइ पोछलकैन, से बात नइ भेल। प्राय: बारह-चौदहअना लोक जीयालालक पक्षमे अपन विचार रखि सान्त्वना देलकैन। मुदा ओ तँ भेल परोछा-परोछी, दू-गोरेक बीचक विचार। असंगठित समाजक असंगठित विचार...। जहिना बर्खाक पानि मात्रामे बेसी रहितो पहाड़क झरनाक संग मीलि झहरैत धार बनि जाइए, तहिना असंगठित विचारोक गति अछि।

राति बीतल, भोर भेल। घरक लगमे रहितो जीयालाल, रूपलालकैँ कहबे बिसैर गेला। मुदा बिसरल रहला नइ, भोरे उठि रूपलाल ऐठाम पहुँच जीयालाल कहलखिन-

"रूपलाल बौआ, अपना सबहक एकठाम घरो अछि आ दुआरियो एके छी। सभ बात बुझबे केने हेबह, भरि दिन काल्हि समाजेकैँ कहैमे बीति गेल, तँए तोरा नइ कहि सकलौं।"

ओना रूपलाल जखनेसँ श्याम सुन्नैरक पोखैर घाटक गप सुनलक, तखनेसँ झखऽ लगल। मुदा खाली झखने की हएत, उठऽ पड़त किने जे ओतेक असान नै अछि। तँए गुमे-गुम विचारैत रहए।

मुदा केतएसँ विचार उठत तही तरमे रूपलाल दबा गेल। एक दिस आइ पनचैती छी, दोसर दिस कौल्हुके घटना पोखैरक घाट परहक छी, जइ पाछू कलंक छिपल अछि जे चरित्रहीन बेटीक बिआह वर्जित...।

..गामक लोककेँ कोनो ठेकाने ने छै जे कखैन राजा बनत आ कखैन कंगाल। बेटाक बिआहमे राजा बनि बाजत जे इंजीनियर बेटा छी। तँए इंजीनक दाम जोड़ि कऽ लेब। आ लगले बेटी बिआहमे कंगाल बनि बजता जे घोर कलजुग आबि गेल, आब ऐ धरतीकेँ विनाशे हएब नीक।

मुदा केतौ किछु हौउ, समाजमे जन्म नेने जन्मसिद्ध अधिकारो आ कर्तव्यो तँ आबिये जाइ छै। लोक बुझह आकि नइ बुझह, मुदा अपन आँट-पेट अपने तँ बुझै छी, तही बीच ने समाजिकता राखि सकै छी...।

यएह सभ सोचि रूपलाल बाजल-

“भैया, हम तँ छोट भाए भेलौं जे आदेश देब से करैले तैयार छी।”

रूपलालक बात सुनि जीयालालकेँ जेना जी-मे-जी एलैन। जीतिया पावैनमे गिरहस्त जहिना धानक जी देखि अपन जीहक पानि जुड़बै छैथ तहिना जीयालालोकेँ जुड़ेलैन। जुड़ेलैन ई जे गामक नीक-बेजाइक विचार जँ दू-गोरे मीलि कऽ करब तँ ओ बेसी नीक हएत। यएह सोचि बी.ए. पास रूपलालकेँ पुछलखिन-

“बौआ, उमेरे बेसी हम जरूर छी, मुदा पढ़ल-लिखल समाजक बीच अखन तक तूँ रहलह तँए दुनू गोरे विचारि कऽ कोनो रस्ता निकालह।”

जीयालालक विचार सुनि रूपलालक मनमे उठल- ओना मनुख मनुखे छी, जहिना अरब-खरब दुनियाँमे पसरल अछि तहिना अरब-

खरब विचारो छै, जिनगियो छै जइसँ केतौ अखज बनि जीब रहल अछि तँ केतौ अरब-खरब बनि...।

बाजल-

"भैया, अखन दुइए गोरे छी। अहाँकेँ एक परिवार बुझै छी तँए परिवार जकाँ कहै छी।"

आगूक बात रूपलालक पेटेमे रहल कि मुँहक बात छीनैत जीयालाल बजला-

"बौआ, जहिना हमर बेटी तहिना ने तोरो बेटीए भेलह। अपन बेटी-बहिनक रक्षा जँ लोक नइ करत तँ की ओ खाइएले आ गामे-गोबरबैले जनम नेने अछि।"

रूपलाल अपन विचारक लिंक पकैड़ बाजल-

"भैया, लोकक तीन अवस्था होइ छै। खसल अवस्था, बैसल अवस्था आ ठाढ़ अवस्था। समाजे खसल अछि। समाज खसल अछि एकर माने ई नै जे समाजक बान्ह खसल अछि, ओ तँ लोकमे निहीत अछि। जेहेन जे समाजक लोकक जुटान रहत तेहेन से समाज खुशहाल रहत।"

रूपलालक विचार जेना जीयालालकेँ जँचलैन। ऊपर-निच्चाँ मुड़ी डोलबैत बजला-

"बेस विचारक बात बुझा कऽ बजलह, बौआ। आगू की करबह से ते विचारि लेबह किने?"

रूपलाल-

"भैया, जहिना गाछक भीतर जे शील होइए, माने सारील लकड़ी, तहिना मनुखो आ समाजोक भीतर शील होइ छै।

जेकरा शील-गुण कहल जाइ छै। शीलक गुण छी किरिया-शीलता। तँए बेकती आकि समाज विकसित दिशामे तखने सुचारू चलि सकैए जखन ओकर 'क्रियाशील' गाछक शील जकाँ सुन्दर, सक्कत आ टिकाउ बनत। तखन तँ आइ भरि देखि लियौ जे समाज की करैए।"❍❍

शब्द संख्या- 3393, 13 सितम्बर 2015

आइ एम शॉरी

तेसर खेप जखन राधाकान्त मास्टर साहैब कहलैन-

"आइ एम शॉरी।"

तखन मनमे सक्कत गिरहक गाँठ बनि गेल।

उनैस सए साढ़े सैंतालीसमे, जहिया देश स्वतंत्र भेल तहिये राधाकान्त मास्टर साहैब अंगरेजी विषयसँ एम.ए. केलैन। मुदा केलैन प्राइवेटसँ। तइसँ पहिने बी.ए. केला पछाति तीन बरख हाइ स्कूलमे शिक्षको रहैथ, जइसँ लोक मास्टर साहैब कहए लगलैन। ओना हाइ स्कूलसँ आगू मुहेँ ससैर पछाति कौलेजमे प्रोफेसर होइत प्रोफेसरक इंचार्य बनला, मुदा बेसी लोक तैयो मास्टरे साहैब कहैन। एकर माने ई नइ जे प्रोफेसर साहैब आकि प्रिंसिपल साहैब कियो ने कहैत रहैन।

तीन साल प्रोफेसरक इंचार्य रहने आनो कौलेजक स्टाफ आ विद्यार्थियो सभ से कहिते छैन। मुदा हमर सरोकार पड़ोसीपनक रहल तँए हम मास्टरे साहैब कहै छिऐन। अपनो कनी नीक लगिते अछि। मास्टर डिग्री पौनिहार जँ मास्टर साहैब कहबैथ तँ नीके लगतैन किने। मुदा बेसी नीक केना लगतैन? मास्टरो तँ सहरगंजा जकाँ भऽ गेल अछि। जइमे सागे जकाँ केकरो सुआद नइ। कपड़ा सीनिहार दरजी

'मास्टर', लोअर प्राइमरी स्कूलमे मैट्रिक पास 'मास्टर', तीन चकिया-चरि चकिया गाड़ी चलौनिहार 'मास्टर', इत्यादि-इत्यादि अनेक मास्टर...।

सात्विक विचारक रहने राधाकान्त मास्टर साहैबमे अखनो माने नबासियो बर्खक अवस्थामे सात्विकता जीवित छैन, जिनगीक दौड़मे सात्विक विचार फुलकलैन तँ मुदा फलकलैन नै बल्कि धीरे-धीरे सिकुरऽ लगलैन...।

ओना आब साल भरिसँ मास्टर साहैब ओछाइन पकैड़ स्वास्थ-लाभ कऽ रहला अछि, पेटक ऑपरेशनो भेल छैन। पूर्ण स्वास्थ-लाभ लेल डॉक्टर गपो-सप्प करबपर रोक लगा देने छैन, जइसँ मोबाइल तँ छैन, मुदा बिनु चार्ज भेल। बिगड़ै दुआरे बेटा-पुतोहु मोबाइल तँ लगमे रहए देने छैन, मुदा पाइ देब परहेज केने छैन।

अपन जरूरत रहितो स्मृति-समुद्रमे औनाइत मन संगी सभसँ कुशल-छेम करैले तरैसते रहै छैन। मुदा उपए की?

देहमे अपनो ओ सामर्थ नै जे चारि डेग चलि पौता। बेटा-पुतोहु लगमे रहितो माने परिवारोमे रहितो, टोक-टाकसँ परहेज केने छैन, अर्थात् दवाइ बेर आकि खाइ बेर वा जिनगीक नित्य-क्रिया छोड़ि, लगमे कियो करवनो नइ रहै छैन।

स्मृतिक अथाह समुद्रमे मन कानि रहल छैन। कानि रहल छैन-जिनगी भरिक अरजित ज्ञान-राशि बँटैले...। कानि रहल छैन- मीठ मुँहक बोल बजैले आ कानकेँ सुनै-सुनबैले...। कानि रहल छैन-साहित्य संसार देखैले...।

मुदा ने आँखिमे ओ ज्योति रहलैन जे देखि पौता आ ने वायुमण्डलमे ओ ध्वनि रहल जे कन्हेठ सकता!

जहिना बाल-बोध बच्चा भूख-पियास लगलापर कानि-कानि माएकेँ सोर पाड़ैए तहिना मास्टर साहैबकेँ हकबाहि लागल रहै छैन

मुदा सुनैबला दुनियाँकेँ सोल्हन्नी बहीर पाबि रहल छैथ। कियो सुनैबला नइ...!

सुभ्यस्त परिवारमे राधाकान्त मास्टर साहैबक जन्म भेल। जमीनदारीक फाँरी परिवारमे, जइसँ नीक सेवा पौनिहार बच्चाक श्रेणीमे रहला। जिनगी एक पक्षक बीच बढ़ैत रहलैन। हाइ स्कूलक पढ़ाइ तक कोनो असोकर्ज नइ भेलैन। मुदा समैक गतिमे पड़ि चारि भाँइक भैयारीक पीढ़ीमे अपने जेठ ठहरला। पैछला पीढ़ी झहरल, ढहैत जमीन्दारीक चपेटमे पड़ने परिवारिक जिनगी टुटलैन। पहिल श्रेणीक उतीर्ण मैट्रिकक विद्यार्थी रहने मनमे रंग-रंग रंगीन दुनियाँक तसवीर नाचए लगलैन। आइ.ए. पास केला पछाति दम खड़ा गेलैन।

मिथिलांचलक उजरल-उपटल इलाका पुरबी क्षेत्र। हजारो परिवार गाम छोड़ि बाहर जा-जा बसि गेल। अपन नीक क्षेत्र माने नीक इलाकामे कोनो स्कूलमे जगह नै भेटने कोसी क्षेत्रक हाइ स्कूल पकड़लैन। जैठामसँ उठैत प्रिंसिपल तक पहुँचला।

राधाकान्त मास्टर साहैबक अपन सृजित जे अगिला परिवार बनलैन ओ जुगानुकूल बहुत अगुआएल। तीन बेटा, तीन बेटीक सम्पन्न परिवार छैन्हें।

समाजक अगुआएल परिवारमे राधाकान्त मास्टर साहैबक जन्म भेलैन। उच्च कोटिक परिवारिक स्तर रहने खेनाइ-पीनाइ आ रहै-सहैक बेवस्थाक संग लत्तो-कपड़ा अगुआएल छेलैन्हे। ओना परिवारक आमदनी घटने खेत-पथार बेचब शुरू भाइए गेल छेलैन। मुदा तैयो सैयो रंगक खर्च परिवारमे रहने खर्चक मोकर फुटले रहै छेलैन।

माता-पिता आ पित्ती-पितियानिक मृत्युक पछाति, माने पैछला पीढ़ीक अन्त भेने परिवारमे भिनौज भेलैन जइसँ एक्के बेर परिवारक चौथाइ निच्चाँ चैल आएल। कुटुम-परिवारक संग दोस-महीम, सर-

समाजक बीच जे सम्बन्ध अखन धरि रहलैन ओ मेन्टेन करैमे..; तहूमे महगाइ बढ़ि गेने, आरो कठिन भऽ गेलैन। ओना कुटुमक बीच खले-खल बँटबारा भऽ गेल रहैन, मुदा दोस-महीम आ सर-समाजक बीच सम्बन्ध पुरबते छेलैन।

टुटैत परिवार एक सीमापर आबि अँटकलैन। सीमा ई जे अपन चारि भाँइक भैयारीमे राधाकान्त मास्टर साहैब जेठ रहने जाबे हाइ-स्कूल तक पढ़लैन ताबे मतो-पिता जीवित रहथिन, आमदनियोँ नीक रहैन। मुदा मैट्रिक तक पहुँचैत-पहुँचैत रंग-रंगक समस्या सभ उठए लगलैन। तीन-चारि बर्खक बीच मतो-पिता मरि गेलखिन आ भैयारीमे माने पिताक भैयारीमे बँटबारा सेहो भऽ गेलैन। अपन पाँच भाए-बहिनक संग माइक परिवार बनलैन।

परिवार छोट भेने ई लाभ तँ होइते अछि जे खरचो छोट भऽ जाइए। सएह भेलैन। असथिर होइत परिवारकेँ देखि अपनो ऊहि बढ़ौलैन। शिक्षकक रूपमे जिनगी ई सोचि एहेन बनौलैन जे जखन घरसँ बाहर नोकरी करए एलौं, आ सभटा खरचे भऽ जाएत तखन जे चिड़ै जकाँ परिवार चहरो-ले मुँह बौने रहत, तेकरा आगू ठाढ़ केना हएब? ऐ प्रश्नसँ राधाकान्त मास्टर साहैबक मन चकरेलैन माने चाकर भेलैन।

मन चकराइते अपन आमदनीक बीच खर्चपर नजैर पड़लैन। खर्च बान्हल। बान्हल ई जे कोनो व्यसन तँ अछि नै जे तइमे एको पाइ खर्च हएत। खाली चाहेटा अछि। ओना ई तँ पढ़ल-लिखल समाजमे व्यसन रहि नै गेल अछि। हँ तखन एते जँ करी जे अपना हाथे चुल्हि पकैड़ ली तँ, अदहोसँ बेसीक बँचत हएत, जे परिवारकेँ दैत अपनो काजक हिसाव...।

ओना बी.ए.मे नाओं लिखा नेने रहैथ, मुदा परीक्षा छुटि गेल रहैन। किताबक समस्या रहबे ने करैन। सोझहे साले बी.ए.मे नीक रिजल्ट भेलैन।

नीक रिजल्ट मनक उत्साहकेँ बढ़ाइए देने रहैन। अपने जिनगीक हिसावसँ परिवारोक बाल-बच्चाक हिसाव सुधारलैन। शिक्षित परिवारक जे आचार-विचार रहैए से परिवारमे धेने रहलैन। समए ससरैत गेल। राधाकान्त मास्टर साहैब एम.ए. केलैन। कौलेजमे प्रोफेसर बनला।

एक तँ साहित्य प्रेमी राधाकान्त मास्टर साहैब, तैपर कौलेजमे पुस्तकालयक जिम्मा भेटलैन। अवसरक लाभ नीक जकाँ उठौलैन। कौलेजक सरकारीकरण भेल, नीक दरमहो हाथ लगलैन, जइसँ तीनू बेटाकेँ नीक शिक्षा देलखिन। दूटा बेटा बैंकक मैनेजर आ एकटा भारत-सरकारक विदेश विभागमे अरबमे नोकरी करै छैन। जेठ बेटाकेँ एकेटा बेटा, जे अमेरिकामे इंजीनियर छैन आ दोसर बेटाकेँ दुटा बेटा, ओहो दुनू इंजीनियर बनि घरसँ बाहरे रहैए। तीनू बेटी-जमाए सेहो राज्यसँ बाहरे छैन।

आइ ओछाइनपर पड़ल राधाकान्त मास्टर साहैबक मन तरैस रहल छैन जे अपन परिवारक बीच मृत्यु हुअए। जइसँ अपना जिनगीक सभ हिसाव सभकेँ सुमझा देथिन। मरबो तँ सएह ने छी जे जिनगीक नीक-अधलाक सभ हिसाव फरिया जाए। किए कियो मुइला पछाति आँगुर बतौत, अखन सोझहेमे सभ फरिया लेब। मुदा मनक बात के बुझतैन?

जहिना परिवार तहिना सरो-समाज आ कुटुमो परिवार। सभ एकचलिया चालि धेने यएह सोचैत जे मुइला पछाति सराधोमे जाइए पड़त, तैबीच अनेरे छुट्टी किए गमाएब। एक्केबेर चलि जाएब।

मास्टर साहैबक मन कानि रहल छैन अप्पन लक्ष्मी देखैले। साहित्यक विद्यार्थी जँ साहित्यक जिनगी जीब जँ साहित्यकार नइ भेल तँ ओ भेल असफलता आ जँ भेल तँ सफलता।

जहिना साहित्य-जीवि वा साहित्यक विद्यार्थी लेल साहित्यकार बनब जिनगीक कृति भेल तहिना ने आनो-आनो काजक होइते अछि।

ओना रंग-रूप, चेहरा-मोहरासँ तीस-पैंतीस बर्खसँ राधाकान्त मास्टर साहैबकेँ चिन्है छेलिऐन, मुदा कहियो-कोनो गप-सप्प नइ भेने दूरी तँ रहबे करए। संयोग भेल गाममे साहित्यिक मंच एकाएक उठि कऽ ठाढ़ भेल, जइमे चारि-पाँच गोटे एकठाम भेलौं, जइसँ मुहाँ-मुहीं गपो-सप्प आ सम्बन्धक नव रूपो ठाढ़ भेल।

ओना मनमे ई शंका बनले रहल जे भलें हमहूँ साहित्येसँ एम.ए. केने छी आ ओहो केने छैथ, मुदा साहित्य रहितो दुनूक गति-मतिमे दूरी रहबे करत किने। मुदा संजोग बनल। अपन जुआनीक जुआरिमे जे अंगरेजी भाषासँ हटि मैथिलीमे कथा संग्रह लिखलैन ओ एकटा पोथी हमरो देलैन।

संगोष्ठीमे एकटा बात आरो भेल। भेल ई जे चारि गोरे मुख्य-वक्ता भेला जइमे दूटा प्रोफेसर रहैथ। पहिल अर्थशास्त्रक आ दोसर अंगरेजीक आ तेसर छला आइ.पी.एस. तथा चारिम रहैथ आचार्य जे संस्कृत विषयक शिक्षक छला। ऐ चारू मुख्य वक्ताक बीच पाँचम अपने रही। मुदा रही अधवक्ता। जेतेक बजनिहार रही, तइसँ बेसी सुननिहार रहबे करैथ। समाजक रूपमे अधिकार बनबैले अपन कर्तव्य तँ पुड़बए पड़िते छै, जँ से सुनि अपन समाजक निरमानमे नइ लगाएब तँ अनेरे ने कार्यक्रम भेल।

नीक कार्यक्रम भेल। तेकर अनेक कारणमे प्रमुख कारण ई रहल जे एक आसनपर बैसि अपन गामक भाषामे अपन बात बुझा-बुझा सभ कहलैन। ओना अशिक्षित समाजमे किछु हौओ बनल ठाढ़ रहिते अछि। ओइ हौआक संग विवाद शुरू भेल। जइसँ एक-दोसरक बीच दूरी कमल। दूरी कमिते सम्बन्धमे बढ़ोत्तरी हुअ लगल। मुदा सभकेँ अपन-अपन परिवारिक जिनगी, तहूमे परिवारिक स्थिति सेहो

एक रंग नइ, कियो घरसँ दूर-दराजमे रहैत, तँ कियो केतौ। एहेन छिड़ियाएल जिनगीमे बितियाएलकेँ तँ बीछै पड़ै छै।

राधाकान्त मास्टर साहैबक कथा संग्रह, पढ़ि अपनो मनमे भेल जे कथा लिखब असान अछि। तइसँ पहिने मनमे मैथिली साहित्यक संसारक प्रदूषित वातावरण देखि शुरूहेसँ एहेन रहल जे हाइ स्कूलक पछाति मैथिली पढ़बे छोड़ि देलौं। जइसँ डॉ. खुशीलाल झा- प्रोफेसर जनता कौलेज- शिक्षक रहैथ मुदा मैथिलीसँ रूचि नइ रहने, कहियो मुहाँ-मुहीं गप नइ भेल। भेल एतबे जे जँ कहियो सोझामे पड़ैथ तँ प्रणाम करयैन, ओहो असीरवाद दऽ दथि।

राधाकान्त मास्टर साहैब कौलेजसँ सेवा निवृति भेला। मुदा ताधैर परिवार छिड़िया गेल छेलैन। बेटी सभ सासुर चलि गेल रहैन। तीनू बेटाक परिवार तीन ठाम भऽ घरसँ हटि गेल रहैन। मास्टर साहैबक अपन विचार रहैन जे सेवा निवृत्तिक पछाति गाममे शान्तसँ रहि किछु साहित्य-साधना करब। मुदा तइमे भारी बेवधात जिनगीमे उतैर एलैन। नोकरिया परिवारमे सेवा-निवृतिक भाड़ बेसिया जाइए जइसँ लगक परिवारकेँ एकटा छुट्टा समांग भेट जाइ छै।

एक तँ परिवारक संग परिवारक भीतर निमंत्रणक प्रथा अछि। जइ प्रथाक बीच मास्टर साहैब तेना जकैड़ गेला जे अपन इच्छा दबि गेलैन। ओना इच्छा-शक्तियो सबल आ दुर्वल दुनू होइए। दबैक कारण भेलैन, किछु लिखैसँ पहिने बहुतो वस्तुक जरूरत पड़ै छै, जे सभठाम सम्भव नहि, तैसंग ईहो जे प्रतिष्ठित अंगरेजी-शिक्षक होइक नाते जेतए जाइ छला, तेतए दू-चारि धिया-पुता पढ़ैले आगूमे आबिये जाइ छेलैन। जइसँ मास-मास, दू-दू मास एकठाम रहि अपन ठौर-ठेकान बिसरए पड़ै छेलैन।

सेवा-निवृत्तिक पछाति जखन राधाकान्त मास्टर साहैबक भेँट केलयैन, तखन ओ अपन मनक बात कहैत कहलैन-

> “सभ दिन किताबक बीच रहलौं, किछु लिखनौं छी आ लिखियो रहल छी, मुदा छपा नइ पाबि रहल छी। जइसँ किछ कमी मनमे अखनो ठहकले अछि।”

एक प्रोफेसरक दरमाहाक जिनगी, तैपर बेटा सबहक आमदनीक स्रोत अलगे। तैठाम जे एते मनसूबासँ लिखलैन ओइ मनसूबामे कमी किए भऽ रहल छैन...?

ओना, राधाकान्त मास्टर साहैबकेँ जेते समए भेटै छैन तइमे अन्तो-अन्त किछु-ने-किछु कथा-कविता लिखिये रहल छैथ।

किछु कथा लिखि कऽ राधाकान्त मास्टर साहैबकेँ कथा बनबैले देलिऐन। किछु बनाइयो देलैन। ओना दुनू गोरेक दू गाम छी मुदा पड़ोसी गामक बीच दुनू गोरे रहै छी। पैरक पनरह-बीस मिनटक आ गाड़ीक पाँच मिनटक रस्ताक दूरी दुनू गोरेक बीचमे अछि।

बेटा बिआहक उत्सव परिवारमे जगलैन। उत्सवसँ छह मास पहिने कहने रहैथ-

“सुधीर, अखने अहाँ सुनि लिअ। बिआहमे रहब अनिवार्य अछि।”

तैपर हमहूँ कहलयैन-

> “काज जहिया हएत तहिया ने, अखन तँ बहुत आगू अछि।”

नीक जकाँ विवाहोत्सव मनल। मुदा कोनो जानकारी नइ दऽ सकला। काजक मास दिनक पछाति गेलौं। गामेमे रहैथ। गप-सप्पक क्रममे कहलैन-

> “आइ एम शॉरी, सुधीर। धियानेसँ हटि गेल। जइसँ समैपर अहाँकेँ खबैर नइ दऽ सकलौं!”

मास्टर साहैबक बात सुनि अपनो मन मानि गेल जे नमहर काजमे मन चौचंग भेने एना होइते छै। मनमे कोनो तरहक शंका नै उठल। उठबो किए करैत। तखनेसँ बिसरए लगलौं।

बीच-बीचमे केतेठाम साहित्यिक कार्यक्रममे एकठाम होइत रहलौं। तैबीच एकटा आरो होइत आबि रहल छल। पएरे जाएब हमरा-ले असान अछि मुदा एते सम्पन्न रहितो कहियो टहलैयो-बुलैले हमरा ऐठाम मास्टर साहैब नइ आबि सकला।

अपनो ऐठाम एकटा काज आएल। काज अर्थात् कृति आ कृतिक माने भेल उत्सव। मनमे उठब सोभाविके छल, दू गोटे वा दू परिवारक बीच सम्बन्ध बढ़ैक तँ यएह सभ ने...। जे सामान्य जिनगीसँ आगू बढ़ि चलने होइत। मुदा तैबीचक जिनगी हुनकर ओहन रूप पकैड़ लेलकैन जे एकठाम केतौ मास-दू-मास चैनसँ नै रहि पबै छला। जइसँ भेँट-घाँटक समैक दूरी बढ़ैत गेल। केतेक परियासक बादो काजक बीच समए नै भेट सकल जे मुहाँ-मुहीं कहितिऐन। मुहाँ-मुहींक कहब ओइठाम अनिवार्य होइ छै जैठाम सम्बन्धक नीव पड़ैए। जैठाम सम्बन्ध बनि चलैत रहैए तैठाम चीठियो-पत्री आकि समादो-मोबाइलसँ काज चलि सकैए।

तैबीच फेर एकटा काज मास्टर साहैबक ऐठाम भेलैन। जे एकटा फेरीबला दिआ भेँट करैक समाद पठेलैन। बहुत दिन भेँटो भेना भऽ गेल छला तँए अपनो बेसी इच्छा जगल। दोसरे दिन भेँट केलयैन। गप-सप्पक क्रम दोसर दिस बढ़ैत गेल, बढ़ैत गेल। तइसँ बूझि पड़ल जे भैरसक पढ़ब-लिखब घटि गेलैन अछि।

सबहक अपन-अपन दुनियाँ छै। तैठाम साहित्यक दुनियासँ हटि परिवारक सम्पन्नताक चर्च विशेष रूपसँ करए लगला। ओना दोसर परिवारक बीचक चर्च सुनब ओतबे नीक अछि जेते अधलो अछि। मुदा दुइए गोरेक बीचक चर्च छल तँए बेसी शंको नहियेँ भेल। तेसरसँ ने तेकठ रूप पकैड़ सकैए। जखने कोनो गप आकि विचार तीन गोरेक बीच हएत, जइमे दू-गोरे जँ ओकरा झुलबै चाहत तँ वएह ने बल पेब बलजोरी आगू ससरत। मुदा दू-गोरेमे तँ से नइ होइ छै। दू सत्-मे जँ

एक सत् हटबो करत तैयो तँ अदहासँ बेसी नै हटि सकैए। जखने अदहा-अदही भेल तखने अपन-अपन सीमा बीचमे गड़ा जाएत। मुदा तैयो जहिना अपन रूटिंगक समए अछि, तइ हिसावसँ गप-सप्प करैत मास्टर साहैबकेँ कहलयैन-

"आब धीरे-धीरे अन्हार पसरत, पएरे छी तँए आब छुट्टी दिअ।"

'छुट्टी' सुनिते जेना किछु मन पड़लैन तहिना चौंकैत बजला-

"एक बेर आरो चाह पीब लिअ।"

गैस चुल्हिक बेवस्था छनिहें, पीबैमे केते समैए लगत। कोनो कि लोमश बाबाक मिनट-घण्टा लगत। बैसले रहलौं।

बिजलीक पंखा जकाँ आस्ते-आस्ते अपन गप उसारैत आड़िपर आबि अँटकला। तैबीच चाहो आबि गेल। चाहक चुस्की लैत बजला-

"अगिला मासमे मुड़न छी, बेटा सबहक विचार छैन जे नीक-जकाँ धुमधामसँ करब।"

सह दैत कहलयैन-

"नीक बात, लोक कमेबे कथीले करै छैथ।"

तैबीच चाहो सठि गेल। उठैत कहलयैन-

"जाइ छी।"

कहलैन-

"दिन-ठेकान तँ अखन नइ भेल अछि, मुदा करब तँ ऐछे। अखने कहि दइ छी जे काज दिन अहाँ जरूर रहिऐ।"

कहलयैन-

"अपन परिवारक काज छी, किए ने रहब।"

कहलैन-

“दिन-ठेकानक जानकारी आगू दऽ देब। अखन निसचित नइ भेल अछि।”

कहलयैन-

“बड़बढ़ियाँ।”

रस्तामे जखन अबैत रही तखन मनमे उठल- जहिना साहित्यक मंचपर सँ सम्बन्ध उठब शुरू भेल ओ भैरसक तहिना पतझड़ दिस ते ने बढ़ि रहल अछि?

मुदा लगले मनमे आएल- लोकक जिनगियो कि सभ दिन एके रंग रहैए। कहियो हरियेबो करैए, कहियो हहड़बो करैए।

समए बीतल, मुड़न बीतल। पनरह बीस दिनक पछाति गमैया हाटपर राधाकान्त मास्टर साहैब भेँट भेला। मुदा बूझि पड़ल जे किछु बोझ पड़ल जकाँ मन भरियाएल छैन। ओना हँसमुख चेहराक संग गहींरगर विचारो तँ छैन्हे तँए अपन बोझ आगू किए आबए देता।

पहिने दुनू गोरेक बीच हाल-चाल भेल। किरिण डुमैएपर रहए। हाटसँ जेते दूरपर अपन घर अछि तेते दूरपर हुनको घर छैन्ह। बीचमे हाटक काज पछुआएले अछि तँए अगुताइ दुनू गोरेकेँ रहबे करए। अपन-अपन काज कऽ अपना-अपना घर एलौं।

आइ पुन: एहीठाम मास्टर साहैब भेँट भेला। बीचमे पता लगि गेल छल जे पनरह-बीस दिन पहिने मुड़न सम्पन्न भेलैन।

कुशल-समाचारक पछाति राधाकान्त मास्टर साहैब बजला-

“आइ एम शॉरी। देखू जे मुड़न सम्पन्न भऽ गेल, एते उधव-बाधवसँ भेल आ अहाँकेँ सुचितो नइ कऽ सकलौं।”

हमहूँ काजकेँ बहटारैत कहलयैन-

"मास्सैब, अपने नै किछु तँ पचहत्तैर-अस्सी बर्खक बीच पहुँचिये गेल हेबइ। तखन जे जुआनीक यादास्त तकै छिऐ से केना हएत...।"

बजला-

"ठीके अहाँ कहै छी, सएह भेल।"

ओना बेवहारक अनुकूल अपन जिनगीक रस्ता बनबैत चलै छी। जइसँ ईहो बात मनमे ठहैकते अछि जे जिनगीक रस्ता सपाट नइ छै, उबड़-खाबड़क संग काँटो-कुँश छइहे। तखन तँ भेल जे उवड़-खावड़मे केना चली आ काँट-कुँशमे केना...।

तैबीच मास्टर साहैब दोहरा कऽ बजला-

"आइ एम शॉरी। अखन जैठाम जइ काजे छी, से दुनू गोरेक पछुआएल अछि। साँझो पड़ल जाइए।"

बातसँ बूझि पड़ल जे मास्टर साहैब सोझहासँ छीटकए चाहै छैथ।

कहलयैन-

"हँ, से तँ तीमन-तरकारीक हाट छी तेहेन-तेहेन कीटनाशक दवाइ-दारू तीमनो-तरकारी सभमे आबि गेल अछि जे नीक-अधलाकेँ परखब कठिन भऽ गेल अछि। तँए किछु बेसीए समए लगत।"

दुनू गोरे दुनू दिस बढ़लौं।

किरिण डुमि गेल, मुदा अन्हार नइ पसरल छल। रस्ताक पाँतरमे रही कि मास्टर साहैबक कहल- 'आइ एम शॉरी' मनमे नाचि उठल। नचिते मनो नाचि गेल। मुदा घिरनी जकाँ नचैत-नचैत जखन मन असथिर भेल तखन मन जागल। जगिते मनमे उठल- माटि छुबि, कण्ठी छुबि, जनौ छुबि, चाहे 'जय गंगाजी' इत्यादि कहि लोक भरि

दिन सप्पत खाइते रहैए मुदा सुधार केते अछि, से तँ वएह जानत। मुदा जँ सप्पत खेने सुधार होइत तँ तेते आ तेहेन-तेहेन सप्पत दुनियाँक अग्नेयमे छिड़ियाएल अछि जे एको गोरेकेँ दोहरा कऽ खाइक जरूरते ने पड़ैत...।

फेर मनमे आएल- आइ मास्टर साहैब दुनियाँमे असगरे वौड़ रहला अछि, लगोक लोक दूर भऽ रहल छैन...!

हाटक रस्तासँ हटैत बाधमे एकटा गाछकेँ बहुत दिनसँ देखैत आबि रहल छी। झल-अन्हार पसरले रहए। जेते लग तेते बेसी आ जेते हटल तेते कम देखि पड़ि रहल अछि। रस्तासँ हटल गाछक ने एकोटा पात देखि पड़ि रहल छल आ ने एकोटा डारि। ठूठ गाछ जकाँ करियाएल देखैमे आबि रहल छल...।

अनायास मनमे फेर उठल- की मास्टर साहैबक विचार कृतिसँ हटि चुकल छैन? जँ से नइ तँ हटल छैन तँ मनक डायरीमे सबहक नाओं भेटलैन आ हमर नाओं केतए हरा गेल?

ओना, अनका हरेने कियो आन थोड़े हेराइए। ओ तँ अपने हेरेने ने हेराएत।

मनमे सवुर भेल। मुदा जखन फेर मास्टर साहैबपर नजैर उनटल तँ देखा पड़ल- मास्टर साहैबक मन हारि रहल छैन। जरि-जरि खससियाह भेल जाइ छैन। जइसँ मन-मनतर केना बनत, भैरसक सएह ने देखि पाबि रहल छैथ।

जाबे तक लोकमे बोलता पुरुख जीवित रहैए ताबैए तक ने एक-दोसराक बीच सम्बन्ध बनै-मेटबैक सम्भावना रहैए, मुदा जखन बोलता पुरुख मरि जाइ छै तखन से थोड़े हएत! से नइ तँ जा कऽ भेँट करबैन।

पहिल साँझक काजसँ निवृति भेला पछाति चाह पीविते मन फुलाए लगल। साँझुका बन्धनक गायित्री मनमे उपकए लगल। चाह

पीला पछाति पान खेलौं। जेना-जेना मुँहमे पान फुलाइत गेल तेना-तेना मनो फुलाइत गेल। जेना-जेना मनमे फूलक कोढ़ी फूल बनि फुला-फुला हँसए तेना-तेना महको महकाबए। मनमे राधाकान्त मास्टर साहैबक तरसैत रूप तड़पैत-तड़पैत आबि गेल। अबिते भूत, वर्तमान आ भविसपर नजैर पड़ल। तीनू कालक बीच मास्टर साहैबकेँ देखि वर्तमानपर आबि अँटैक गेल। अँटैक गेल ई जे अपने मास्टर साहैब समझदार-सिरजन कर्ताक रूप-वैभवसँ परिचित छैथ मुदा परिचित छैथ वैचारिक धरतीपर। भैरसक तही बीच ने त्रिशंकु जकाँ केतौ लसैक गेल छैथ। जिनगी भरि नैतिकताक गुणगान करैबला परिवार एते दूर केना हटि गेल? साहित्यकारक अगिला पीढ़ी साहित्यिक वंश जीवित नइ रखत तँ ओइ वंशक जे गति होइ छै, तेकरा तँ बाँटबो असान नहियेँ अछि। साहित्य क्षेत्रसँ बहुत हटि परिवार वर्तमानी हवामे बहि बहुत दूर भऽ गेलैन अछि। एहेन स्थितिमे भेँट करब नीक आकि नइ?

मन ओझरा गेल। मुदा लगले ओझरी छुटल। छुटिते मन परिवार-जनक किरिया-कलापपर पहुँचल। पहुँचिते मनमे नाचल- भेँट करए जाइऐन आ जँ कहीं समांग ई कहि भेँट नै करए दथि जे 'डाक्टरक चैतौनी अछि जे किनकोसँ गप-सप्प नइ करऽ देबैन।' तखन?

पएर झन-झना गेल। झनझनाइते तेतेक झुनझुनी लगि गेल जे उठि कऽ ठाढ़ हएब परलय बूझि पड़ए लगल।OO

शब्द संख्या- 2927, 23 सितम्बर 2015

ओऽ-होऽ-होऽ हूसि गेल

भादो मास, रौदियाह समए। अदरा जे बरिसल तेकर पछाति एको ठोप पानि मेघसँ नइ चुबल। ओना अदराक बरखा सभ पोखैर-इनार, खेत-पथार, गाछ-बिरीछक जीहमे जान आनि देने छल मुदा पछातिक समए सुदिन नइ भेने दुरदिने जकाँ बनि गेल।

रातिक नअ बजैत रहए, उम्मस, हवाकेँ के कहए जे सिहकियोक केतौ दरस नहि।

चौंसैठ बर्खक गुदरी काका ओछाइनपर एक-करसँ दोसर कर घूमि-घूमि कछ-मछ करै छला। ओना ताड़क पंखा ओछाइनेपर रहैन मुदा देहमे ओते बुत्ता नइ जे झमाड़ि कऽ पंखा हौंकि देह ठंढ़ा लइतैथ।

तेकर कारण रहैन मधुमेह, ब्लड-पेसर आ गैस्टिकक त्रिवेणी घाट बनल देह। दू-चारि बेर जखने पंखा डोलबैथ कि बाँहिये दुखा जाइन। हाथसँ काँख लग तक बिन-बिना उठैन। समैक गतिक दुख, देहक दुखकेँ पछाड़ि छातीपर बैसल गुदरी काकाकेँ...।

देहक संग-संग मनो कछ-मछ करैत रहैन। कछ-मछाएल मने बड़बड़ेला-

"ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल!"

ओना चेथरियो काकी घरेमे रहथिन, मुदा ओ दोसर चौकीपर दोसर दिस घूमि कऽ सूतल रहथिन।

पहिल बेर जे गुदरी काका बजला तँ चेथरी काकी नइ सुनि पौलखिन। नइ सुनैक कारण रहैन गाढ़ नीन आ गाढ़ नीनक कारण रहैन दिनक एकादसी उपास। भरि दिन सहल रहैथ, साँझमे सबेर-सकाल भानस कऽ दुनू परानी खा नेने रहैथ, सएह अन्नक निशाँ चैढ़ गेल रहैन।

कछमछ करैत दोहरा कऽ गुदरी काका फेर बड़बड़ेला-

"ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल!"

ऐबेर चेथरी काकी सुनि गेली। काँच टुटल नीन रहैन पहिने मनमे भेलैन जे पुछिऐन की हूसि गेल। मुदा हाफी होइते भक खुजलैन। भक खुजिते मनमे भेलैन, भैरसक सपनेला-तपनेला अछि। बजली किछु ने, मुदा खोंखी करैत अपन उपस्थिति पतिक डायरीमे दर्ज करा लेलैन। पत्नीक सह पेब गुदरी काका सहटैत विचारकेँ सहटारि बजला-

"ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल!"

ऐबेर मुदा चेथरी काकी समधानि बजली-

"कोन गड़लाहा तोड़ा बिला गेल जे हूसि गेल?"

तमुरिया हाइ स्कूलसँ गुदरी काका सकेण्ड डिवीजनसँ मैट्रिक पास केलैन। उनैस सए साठिक लगीच घोघरडीहा ट्रेनिंग कौलेज खुजल जइमे चारि ग्रेडक शिक्षण शुरू भेल। पहिल बैचक विद्यार्थी, गुदरी काका टीचर ट्रेनिंग, गामेसँ आबि-जा कऽ लेलैन।

संयोग नीक बैसलैन, साले भरि ट्रनिंग केला पछाति लोअर प्राइमरी स्कूलक शिक्षक बनि गेला। अखुनका जकाँ तँ गिनती दरमाहा नइ भेटैन मुदा समयानुकूल जिनगीक अनुकूल दरमाहा भाइए गेलैन।

जइ दिन नोकरी जुआनि केलैन तइ दिन गंजक हाटपर सँ कुटुर-मुटुर आनि चेथरी काकीकेँ हाथमे दैत कहलखिन-

> “हमरा परसादे अहाँ गुरुआइन भऽ गेलौं। लिअ मिठाइ खा मनमे बसा लिअ। ऐसँ बेसी हम काइए की सकै छी।”

गुरुआइन सुनिते चेथरी काकीक मन भदवरिया बाढ़ि जकाँ तेते दहला-भँसिया गेलैन जे अपन सीमा-सरहदक ठेकाने ने रहलैन। बजली-

> “दुनू बेक्तीकेँ जिनगीमे घटत ते नइ।”

जेहने हूबा तेहने मनसूबा गुदरी काकाकेँ रहबे करैन। दहिना हाथ उठा कऽ बजला-

> “अहूँ की बजै छी। जिनगी भरिक खरचा सरकारक हाथ चलि गेल।”

गुदरी काकाकेँ समयानुकूल पहिल सन्तान- बेटा- भेलैन। मुदा तोरमाइर पत्नी रहने दोसर सन्तान नअ बर्खक पछाति आ तेसर सात बर्खपर भेलैन।

पहिल बेटा, जेहने माइक ननुगर तेहने पिताक। शिक्षकक परिवारमे धिया-पुता मैट्रिको ने पास केलकैन। तेसर बेटी रहैन जे सासुर बसै छैन। दुनू बेटा पत्नी आ धिया-पुताक संग चेन्नै आ दोसर बंगलोरमे रहै छैन।

अखन तक चेथरी काकी चुल्हि तरक कनियाँ अपने बनल रहली अछि। केहेन मने रहे छैथ से तँ ओ जानैथ मुदा नवकीए कनियाँ जकाँ देहमे पानि तँ छैन्हें।

चेथरी काकीक बात सुनि गुदरी काका कहलखिन-

"आब देहमे ओते बुत्ता नइ अछि जे बेसी-काल जोर-जोरसँ बाजब। तँए लगमे आउ, परसुका बात कहै छी।"

चेथरी काकी अपन चौकीसँ उठि गुदरी काका लग आबि बैसैत बजली-

"परसुका कोन बात कहब, कहू।"

पत्नीक सिनेह भरल जिज्ञासु मन देखि गुदरी काका सिहैर गेला। जाड़क मास नहेला पछाति जहिना देहक संग मनो सिरसिरा लगै छै तहिना गुदरी कक्काक मन सिरसिरेलैन। बजला-

"अपन हारल अहाँ छोड़ि केकरा कहबै।"

गुदरी कक्काक लटारम भरल बात सुनि चेथरी काकीक मनमे खींझ उठलैन, बजली-

"जे भगलपन लधने छी से छोड़ू, परसुका बात पहिने बाजू।"

गुदरी कक्काक शिक्षण जिनगी ओइ क्षितिजपर पहुँच गेलैन जेतऽ पति-पत्नीसँ आ पत्नी-पतिसँ विचारक संग क्रियाशीलताक लेखा-जोखा करैए। जड़ि काटल गाछ जकाँ गुदरी कक्काक मन क्षितिजपर सँ अर्ड़ा कऽ खसलैन। विधुआएल मने बजला-

"जिनगीक संगीक रूपमे तँ अहींकेँ हाथ पकड़लौं, तँए बाढ़ैन मारी कि सूप, मुदा अपन हारल कहबै केकरा।"

चेथरी काकीक मनक भूमि थलथला गेलैन। ओहने भूमिपर ने लोक गबैए- 'हाथी पियासल घोड़ा पियासल, दल-दल पानि थल-थल वाणि...।'

बजली-

"अच्छा बुझलौं, बड़ चिक्कन चालि-ढालिक जिनगी अछि। पहिने परसुका बात कहू।"

गुदरी काका बजला-

“ब्रह्म स्थानमे एक पनरहियासँ भागवत-कथा पाठ होइए। बेरू पहर-के व्यासजी अपन मंत्रक रूपमे प्रवचन सेहो करै छैथ।”

परसुका बात सुनैले चेथरी काकीक मन कछमछाइत रहैन। बिच्चेमे टोनि देलखिन-

“बुढ़ाड़ीमे मन वौआइए, पहिने परसुका बात कहू तखैन नीनसँ पलखैत बँचत ते दोसरो-तेसरो बात सुनि लेब।”

ओना गुदरी कक्काकेँ उम्मससँ गुम्साएल मनमे होनि जे कोनो धरानी एहेन समए कटए। मुदा विचारो तँ रसक खाने छी। जागलकेँ सुताइयो सकैए आ सूतलकेँ जगाइयो सकैए। ई तँ भेल अपन हाथक खेल। टोकारा भरैत बजला-

“जाबे कोनो पोखैर-इनारक महार कि जगत नइ नापि लेब, ताबे ओइमे केते पानि छै, से केना बुझब। एना जे अगुताएब तखन काजक गप हएत?”

गुदरी कक्काक विचारक असैर चेथरी काकीक मनपर पड़लैन। बजली-

“अच्छा, एते गलती हमरेसँ भेल।”

सह पेब सहटैत गुदरीकाका बजला-

“ओना व्यासजीक प्रवचन अढ़ाइए बजेसँ होइ छैन मुदा कहियो गेल नइ छेलौं, तँए समए नीक जकाँ नइ बूझि पेलौं, तीन बजे जखन पहुँचलौं...।”

बीचेमे चेथरी काकी बजली-

"एना जे बातकेँ चेथारब तेते सुनैक छुट्टी अछि। भरि दिनक सहल उपास कएल देह अछि, तेकरे फल ने भेल अन्नक रूचि आ नीनक सुख। गाढ़े नीन ने सभकेँ नीक लगै छै।"

पत्नीक विचार सुनि गुदरी कक्काक मन आरो छान कएल पानि जकाँ नीक बनि गेलैन। बजला-

"जाबे ब्रह्म स्थानक भागवत-कथाक भूमिपर पहुँचलौं, ताबे व्यासजी ज्ञान-धियानक विचार समाप्त कऽ नेने छला। मुदा घर-परिवारक चर्च शुरू केलैन।"

बिच्चेमे चेथरी काकी बजली-

"पच्चीस बेर कहलौं जे एना गपकेँ नइ चेथारू, जे कहै के अछि से सोझ डारिये कहू।"

'सोझ डारि' सुनि गुदरी कक्काक मन विहूस उठलैन। मन मानि लेलकैन जे अपना करतबे हूसलौं। बजला-

"अहाँ पत्नी छी, ई बात जँ ओइ दिन बुझने रहितौं, जइ दिन अहाँ संगी बनलौं। मुदा परसू व्यासजीक मुहेँ जखन सुनलौं जे सम्बन्ध बनैले सम्बन्ध सूत्र होइ छै।"

'सम्बन्ध' आ 'सम्बन्ध-सूत्र' सुनि चेथरी काकीक मन चमकलैन। चमैकते बजली-

"की कहलिऐ सम्बन्ध आ सम्बन्ध-सूत्र?"

पत्नीक पिपाशु रूपी मन देखि गुदरी कक्काक मन पपीहा जकाँ टाँहि देलक-

“पिता-पुत्रक सम्बन्ध पिता-पुत्रक जिनगीक सम्बन्ध-सूत्र जाबे धरि पकैड़ नइ चलत, ताबे धरि अहिना हूसल जिनगी आरो हूसैत जाएत।”❍❍

शब्द संख्या- 1027, 29 सितम्बर 2015

मीनी भ्रष्टाचार

एकाएक भोरमे समाचार भेटल जे परसू तक फारम भराएत मुदा काल्हि रबिक छुट्टी आ परसू गाँधी जयन्तीक छुट्टी छी तँए आइयेटा समए अछि।

बी.ए. फाइनलक विद्यार्थी छी। तेरह सए रूपैआ फीस लागत। ओना जेकरा जातिक प्रमाण-पत्र रहत ओकरा तीन सए कम लगतै।

तीन सएपर नजैर अँटैक गेल। गरो नीक पकड़ा गेल रहए। गर ई पकड़ाएल रहए जे जहिना मौसमक आगम पकैड़ सचरगर किसान खेतीक हिसाव पकैड़ लइ छैथ तहिना हमहूँ पकैड़ नेने रही। माने ई जे मास दिन पहिने फारम भरैक आगम देखि जातिक प्रमाण-पत्र बना नेने रही। नइ तँ तीन सए बेसी हमरो लगबे करैत। ओना समैक धड़फड़ीमे सत्तैरसँ अस्सी प्रतिशत विद्यार्थीकेँ बेसी लगबे करतैन। तेकर कारण अछि जे जातीय आधारपर छूट थोड़े भेटैए ओ तँ जातिक प्रमाण-पत्रपर भेटैए। समैक धड़फड़ी ई जे एक तँ फारम भरैक समाचार अचानक निकलल। दोसर, पनरह दिन पहिनैयेँ चुनाव आचार संहिया लगि गेने सभ कर्मचारी चुनावक तैयारीमे जुटि गेला।

बाबूकेँ कहलयैन-

"फारम भरऽ जाएब?"

'फरम' सुनि बाबूक मनमे खुशी भेलैन। खुशीक कारण रहैन जे बेटा स्नातक-परीक्षाक मोड़पर आबि गेल। शुभ हौउ।

बजला-

"केना की लगतह?"

एक तँ फारम भरैक खुशी तैसंग पिताजीक सहियाएल विचारक खुशी, मन उधियाइते रहए।

कहलयैन-

"तेरह सए लागत।"

सत्ताइस सएमे काल्हिये एक बोरा उसना चाउर बेचने रहैथ, दुइये सए खर्च भेल रहैन। घरसँ तेरह सए रूपैआ निकालि हाथमे दैत मुँह दिस देखए लगला, जे नाकरो-नुकर करैए आकि सुहरदेसँ...। ओना अपन मन गवाही दऽ देलक जे तीन सए बँचबे करत।

फारम भरला पछाति चुनावक घोषणा भऽ गेल जइसँ परीक्षा पनरह दिन पाछू धकला गेल। मुदा पनरह दिन पछुएने मनमे कुवाथ नइ भेल, खुशीए भेल। तेकर कारण रहए जे चुनावमे समए नोकसान हेबे करत, समए नोकसान ऐ दुआरे हएत जे एक तँ पहिल बेर वोटर भेलौं जइसँ मतदाता तँ भाइए गेलौं, दोसर नेतागिरियो तँ अखने उपजत। तँए जे अवसर चुकब...।

चुनावक दिन तँइ होइते, अखड़ुआ घास जकाँ राजनीतिक पार्टियो आ नेतो जनमऽ लगल। एक तँ ओहुना राजनीतिक पार्टीक संग गाम-गामक जतियारे, धरमाले, भाषणाले पार्टी ढेरियाएल ऐछे तैपर सँ आनो-आनो राज्य सबहक पार्टीक सराइर ससैर-ससैर राज्यमे आबि गेल जइसँ जेते सराइर तेते मुँहपर सँ गाछो जनैम गेल।

एक तँ छत्तीसवर्णा गाम तैपर सँ बहरबैया आमदनी तेते भेल जे गामक लोकक विचारे बरहबट्टु भऽ गेल।

जहिना कोनो परती-पराँत आकि बलुआएल बाधक खेतमे चलैक बाटक ठेकान नइ रहैए, जेम्हर सोझ बूझि पड़ल, तेम्हरे सुगरिया चालि पकैड़ बाट बना लोक चलैए। तहिना गामोमे भेल। एके मुँहक बातो आ विचारो दिन-दिन गाड़ीक पहिया जकाँ कहियो वामी घुमऽ लगलौं तँ कहियो दहिनी। मुदा जे भेल से भेल, एते तँ लाभ भेबे कएल जे जइ-जइ पार्टीमे मन-भेद छल से मन-भेद मेटा गेल। जइसँ ओइ गाछ जकाँ भाइए गेल जे जैड़ेसँ डारि छोड़ैए। माने ई जे गाछकेँ जैड़ेसँ झमटगर डारि निकलल ओइमे एक-गच्छा जकाँ सिरगर डारि आकि धड़े बनब भरिया जाइ छै। खैर जे हौउ...।

मुदा ई तँ भेल जे एक-गच्छा पार्टी राजसँ उपैट दू-डरिया, तीन-डरिया, चारि-डरिया, पँच-डरिया, छह-डरिया तक बनि ठाढ़ भेल। एक तँ बिहार ओहन बिहार छी जेतए रंग-बिरंगक यात्री घुमैले एबे करत, तैठाम राजेटाक विचार चलत, से केना हेतइ। आन-आन राजक मकैसँ लऽ कऽ बजरा-बजरीक संग धानो-गहुम तँ चलिये आएल। जइसँ फेर एक-गच्छा सबहक हकक चास लगि गेल।

चुनावक नोमिनेशन शुरू होइसँ पहिने चौक-चौराहापर पटका-पटकी शुरू भेल। जइसँ मेला-ठेला जकाँ आकि सर्कस-सिनेमाक घर जकाँ तेना घोल हुअ लगल जे चिन्हे-पहचीन बिला गेल। सोझहे हल्ला हुअ लगल। हल्लो केनिहार कि अदी-गुदी, सोझहे टिकाशने लगसँ भाषण पकैड़ लिअए। मुदा जे भेल, से नीके भेल, भगवान सभकेँ भल करथुन।

तैबीच एकटा जरूर भेल जे जहिना एस्पर्म लाखो-लाख मिलैत एकटा बनि रहि जाइए तहिना चुनाव छनाइत-छनाइत एकटा बातपर आबि अँटैक गेल। ओ अँटकल भ्रष्टाचारपर। सबहक मुद्दा माने सभ पार्टीक मुख्य भाषण भ्रष्टाचारपर आबि अँटैक गेल।

जेठ मास जकाँ चारू बाधमे लू नाचए लगल। लू ई नाचए लगल जे जेहने प्रश्न तेहने वोट लेनिहारो आ तेहने देनिहारो। पनचैती हेबे करत।

चुनाव गेल। परीक्षा आएल। मुदा सिलेवशक किताबक संग हेल्पे बुकटा पढ़ने रही। प्रश्नोत्तरी किताबसँ भेँट नइ। तँए अखबारक न्यूज जकाँ पेपरसँ प्रश्नक उत्तर तकैमे कनी-मनी छह पाँच भाइये जाइ छै, से तँ भेबे कएल। मुदा बेसी नम्बर नइ तँ कमो नम्बरसँ पास करबे करब। मुड़ पलटे नाचे साहु, जखन पास करैक बिसवास मनमे ऐछे तखन मन किए ने खुशी रहत। सालक परीक्षाक विसर्जन भेल। लटैत-बुड़ैत हमहूँ स्नातक भेलौं।

दोसर साल चढ़िते विश्वविद्यालयमे दीक्षान्त समारोह भेल। हमहूँ स्नातक बनि भाषण सुनलौं। ओ भाषण नइ जे दीक्षा पहिने शिक्षा पछाति देल जाइ छै बल्कि ओ भाषण जे शिक्षाक पछाति दीक्षा देल जाइ छै।

स्नातक बनि गाममे छी। अपन जिनगी दिस नजैर उठेलौं। परिवार बना बसाएब अछि जे कोनो नव काज नहियेँ छी। अदौसँ होइत आबि रहल अछि आगूओ होइत रहत। पिताक परिवारक देखल-भोगल जिनगी ऐछे तँए मनमे बेसी उज-माज नइ भेल। असथिरे रहल। विचार मोड़ लेलक। पैछला चुनावक प्रश्न–भ्रष्टाचार-पर मन दौड़ गेल।

पिताजी जे बजारसँ समान अनैले पाइ दइ छला, तइ पाइक हिसाव कहियो कहाँ सुमझौलिऐन। जइसँ ने ओ वस्तुक उचित मूल्य बुझलैन आ ने अपन डायरीक हिसाव शुद्ध रहल। फजिलाहा पाइक अँटावेश ओही वस्तुक सूचीमे ने मीनहा करब?

...धक-दे मन फारम भरैपर पहुँचल। तीन सए रूपैआ तँ अखनो मने अछि। मुदा आब उपाइए की?

मनमे उठल- यएह ने मीनी भ्रष्टाचार भेल! ❍❍

शब्द संख्या- 823, 5 अक्टूबर 2015

गजपट खेती

चारि सालक बैसारीक पछाति माने बी.ए. केलापर शिक्षा-मित्रक नोकरी भेल। नोकरी होइते मन गद्-गदा गेल। गद्-गदा ई गेल जे जखन कोट-कचहरीक चपरासीकेँ चारिअना मोहर दिआइ भेटने चखनाक संग ताड़ी-दारू चलैए, तखन तँ हम कहुना स्कूल शिक्षक भेलौं। खाइ-पीबैक संग स्कूलक मकान बनबैक ठीकेदारी, तैपर सँ केतेको सरकारी कार्यक्रम...।

सरकारी नोकरी छीहे, सेवा निवृत्तिसँ पहिने दरमाहा भेटत पछाति पेन्शन, जिनगी भरिक ठौर-ठेकान छीहे। मनमे उठबे ने कएल जे डेढ़े हजारक नोकरी भेल आ बी.ए. पास केला पछाति हाइ स्कूलक विद्यार्थीकेँ पढ़बैक क्षमतो अछि। मुदा जे अछि से रहह, लोअर प्राइमरी-स्कूलक शिक्षक बनि जुआनि कऽ लेलौं।

पहिल मासक दरमाहा उठा, पिताजीकेँ दैत कहलयैन-

"डेढ़ हजार रूपैआ महीनाक दरमाहा छी।"

रूपैआ देखि पिताजी नजैर घुसका मने-मन किछु विचारए लगला। की विचारए लगला से तँ ओ जानैथ मुदा बूझि पड़ल जे भैरसक अपना जिनगीक आमदनीसँ तुलना कऽ रहल छैथ। माइक मनमे बेसी चप-चपी बूझि पड़ल, रूपैआ देखि मनक अरमान सभ

जेना जगि रहल छेलैन। मुदा जे भेल होनि एते तँ जरूरे भेलैन जे पति-पत्नीक बीचक जे परिवारक घार बहैत आबि रहल अछि ओइमे असिया आस लगबे केलैन। असियो आस केना ने लगितैन, जैठाम लोकक देहे माटिक काँच घैल जकाँ अछि जे कनियोँ खसने-पड़ने आकि धक्का-धुक्की लगने टन-दे फुटि जाइए...।

चपचपाएल माइक मन रहबे करैन। पिताजीकेँ गुम देखि बजली-

> "बौआक कमाइ छी, भगवान करैथ जे आगूओ अहिना कमाइ देखैत रही।"

माइक बात पिताजी सुनि लेलैन, बजला किछु ने, माइयोक मनमे किए उठितैन जे कमाइक संग खरचोक आमदनी बढ़त। समए घुसकने जिनगियो घुसकै छै, जखने जिनगी आगू मुहेँ घुसकत तखने रंग-रंगक तेकर भरपाइ भऽ जाएत। खरचो बढ़त...।

पितोजीक मनमे किए ने उठितैन जे अखन तक परिवारमे रेडियो, टी.बी., मोबाइल, मोटर साइकिल नइ आएल अछि ओ शिक्षकक घर बनने एबे करत...।

दोहरबैत माए पिताजीकेँ कहलखिन-

> "मन किए खसौने छी, उछटगर बनाउ। भगवान सभ मनकमना पुरा करता।"

'मनकमना' सुनि पिताजीक संजोगल मनोरथ जेना जगलैन। माए दिस आँखि उठा बजला-

> "बहू दिनसँ मनमे उठैत आबि रहल अछि जे किछ तीर्थ-व्रत करी मुदा गिरहस्ती-जिनगीए जंजाल छी। गोसाँइयो बाबा कहने छथिन- गृह कारण नाना जंजाला।"

पिताजीक बात माए जे बुझलैन मुदा हम नइ बूझि पेलौं जे की कहलखिन। बिनु बुझल बातमे किछु बाजबो उचित नइ बूझि चुपे रहब नीक बुझलौं, तँए मुँह बन्न केने रही।

माइक मुहेंमे जना रंग-रंगक बरी छनाइत रहैन तहिना छनछनाइत बजली-

> “भगवान जहिना एक-सँ-दू केलैन तहिना आगूओ तीन-सँ-चारि हेबे करत।”

एक तँ पिताजीक विचार मनमे घुरियाइते रहए तैपर माए आरो घुरछी लगा देलैन। की बजली जे एक-सँ-दू भेलौं आ आगूओ तीन-चारि-पाँच होइत जाएब? मुदा बिच्चेमे जेना पिताजी परिवारक लगाम पकड़लैन। माइक बेलगाम बात सुनि, सेरिया कऽ लगाम पकैड़ माए दिस मुँह उठा बजला-

> “देखियौ, देखा-देखी ई दुनियोँ चलै छै आ लोको चलैए। अखन तकक जिनगी जे परिवारक रहल ओ अढ़ाइ-बीघा खेतक उपजापर रहल। ओना रंग-रंगक आफदो-असमानी होइते आबि रहल अछि आ आगूओ होइत रहत। मुदा से नइ। ”

बिच्चेमे माए टपकली-

> “राजा-दैव अहिना होइ छै।”

माइक बात पिताजी सुनि लेलैन, मुदा अपन विचारक कड़ी नइ तोड़लैन। बजला-

"जहिना बरहवर्णा गाम होइए तहिना बरहवर्णा खेतो-पथार अछि, जेकरा चास-बास कहै छिऐ। तहिना बारहो बिरहिनी उपजो होइए आ तहिना बिरहाएल काजो होइए।"

ऐबेर मुदा माए ठमकली। ठमैकते बजली-

"आब बेटो करताइत भेल, दुनू बापूत जेते विचारि-विचारि काज करब तेते ने परिवारक नीक हएत।"

माइक बात सुनि पिताजी हमरा दिस नजैर उठौलैन। पहिने हियासि कऽ देखला, देखला पछाति बजला-

"बौआ, अखन तकक जे जिनगी अछि ओ हेराएल-भोथियाएल गिरहस्तीक जिनगी अछि। जइ परिवारमे पाँचटा समांग रहत, खुट्टापर माल-जाल रहत आ खेती-बाड़ी रहतै, ओइ परिवारमे ओहन कारखाना ठाढ़ रहत जे चौबिसो घण्टा चलैए। तँए कहियो कोनो तीर्थ-वर्थ नहि जा पेलौं। से विचार होइए जे स्कूलक छुट्टी आ बँचल समए जँ खेतीमे सहयोग कऽ दैतह ते मास-दू-मासक छुट्टीक समए बीचमे भेटैत रहत आ मनक कलियाएल लिलसाक पुरती होइत रहत।"

पिताक सहगर विचार सुनि मन मानि लेलक जे अखनेसँ किए ने तैयार भऽ जाइ। कहलयैन-

"पिताजी, जे भार ऊपरमे देब, तेकरा निमाहैक...।"

'निमाहैक' मुहसँ निकैलते जेना कण्ठ दबाए लगल। बकार बन्न भऽ गेल। पिताजी बूझि गेला जे निमाहब भारी बूझि पड़ि रहल छै। सम्हारैत बजला-

"बौआ, खेतीसँ अन्नो-पानि निकलैए, तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरी निकलैए। परिवारमे अही सब-कथुक ने खगता अछि।"

पिताक सोल्हन्नी विचार सुनबो ने केलौं कि बिच्चेमे मन उधैक गेने बजा गेल-

"बाबूजी, परसुका हाटमे कोनो तरकारीक भाउ तीस रूपैये किलोसँ कम नइ रहइ।"

हमर विचार सुनि पिताजी कैं आरो सह भेटलैन। बजला-

"बौआ, पाँच कट्टा चौमास छह। चौमासक माने ई भेल जे जइ खेतमे बारहो मास तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरी उपजैए, से तँ अपने अछि।"

पिताजीक बात सुनि अपना दिस तकलौं तँ बूझि पड़ल जे खेत तँ देखले अछि खाली खेती करैक लूरि नइ अछि। भीतरे-भीतर मन ठमकऽ लगल। बातो तँ सत्ते अछि, केना ने ठमकत...। जे बात पिताजी बूझि गेला। माएकैं कहलखिन-

"बड़ीकालसँ विचारमे ओझराएल छी, एकबेर आरो चाह पिआउ।"

चाह पीबिते पिताजी कहलैन-

"बौआ, दुनियाँ सबहक छी आ केकरो ने छी। जीव-जन्तु अबैत रहत, जाइत रहत मुदा दुनियाँ ठामै रहत। मनुख कर्ता बनि धरतीपर जनम लइए, जेहेन कर्म करत तेहने अपनो पौत आ दुनियोँ देतै।"

पिताक विचार जेना मनकैं तोपि देलक। कहलयैन-

"पिताजी, आइ बुझि पड़ि रहल अछि जे परिवारसँ जेते हटल रहलौं, ओते सटि नइ पेलौं। माने ई जे परिवारक जरूरत नइ बूझि पेलौं।"

हमर बात सुनिते पिताजी बजला-

"पचीस-तीस बर्ख पैछला बात छी। अहिना दरबज्जापर बैसल रही, ब्लौकक भी.एल.डब्लू. पहुँचला। गरमी मास रहै पियास लगल रहैन। अबिते बजला जे एक लोटा पानि पिआउ। कहलयैन, आउ कनी जिराइयो लिअ। चौकीपर बैसला। छुच्छे पानि पियाएब नीक नइ बुझलौं। घरमे मुरही-लाय रहए। कहलयैन, छुच्छे पानि केना पीब। एको बेर नाकर-नुकर नइ केलैन जे पानियेँटा पीब। कहलैन, सबेरे आठे बजे खा कऽ गामसँ चलल छेलौं, ऑफिसमे हाजरी बनबैत एलौं हेन...।"

बिच्चेमे छीक भेलैन। हम मुड़ी डोला-डोला सुनैत रही। फेर आगू बाजए लगला-

"अखन तक गाममे रसायन खादक चलैन नइ भेल छल। वएह ओइ दिन खादो, बीओ आ खेतीक ओजारो आ नव तकनीकसँ खेती करैक बहुत बातो कहलैन। मुदा कनी-मनी कोनो-कोनो ओजारो, बीओ आ खादोक चलैन गाममे पकड़लक जे सफल-असफल दुनू होइत रहल। वएह बजला जे पूसा कृषि कौलेजसँ खेती-वाड़ीक पत्रिको निकलैए आ सौंसे देश मिला हिन्दी-मैथिलीमे पचासी स्टेशनसँ पनरह-पनरह मिनटक समाचारो रेडियोसँ दइए। ओना आब तँ अनेको पत्रिको निकलिऐ रहल अछि। मुदा ऐठामक किसानक एकटा दुखद पहलू ईहो रहल अछि जे जेतबो पत्र-पत्रिका सिनेमा जगतक परिवारक टेबुलपर रखैए तेकर चौथाइयो अपन जीवनसँ सम्बन्धित कृषि आधारित पत्रिका नइ रखैए।"

पुछलयैन-

"पहिने की कहलिऐ जे सफल-असफल दुनू होइत रहल अछि?"

पिताजी बजला-

"अखन ओते नमगर-चौड़गर विचार करैक समए नइ छह। अखन तूँ एतबे भार उठा लएह जे पाँच कट्ठा चौमाससँ बारहो मासक फल आ बारहो मासक तीमन-तरकारी परिवारक पुरा ली।"

घरसँ थोड़े हटि चौमास खेत अछि, तइसँ थोड़े हटि कऽ एकटा वोरिंग छै, जे दोसर गोरेक छिऐन। ओइसँ खेती-ले पानि भेटत।

कातिक मास, किसानक धर्मक मास। तीमन-तरकारी आ रंग-रंगक फल-फलहरीक लगबैक मास। उत्तरे-दछिने खेत अछि। पानि उत्तरसँ औत।

खेतीक योजना बना, उत्तरसँ पाँच धुर कोबी, तैबीच दस धुर धनियाँ, दस धुर मुरै-मटर, तइसँ आगू अल्लू आ तइसँ आगू फेर कोबी, बैगन इत्यादि-इत्यादि लगेलौं।

कोबीकेँ बेसी पानिक खगता। ओइ हिसावे धनियाँ मुरैकेँ कम पानि चाही। दमकल पानि, कहियो सम्हारि नइ पेलौं। सभ दिन सभ किछु पटैत रहल। कोबी तँ नीक भेल मुदा धनियाँ-मुरै नइ भेल!

पछाति बुझलौं जे खेतीए करब गजपट भऽ गेल।○○

शब्द संख्या- 1170, 8 अक्टूबर 2015

समुद्री विद्या

सात बर्खक पछाति गामक सीमानपर आबि जुक्तिनाथ जखन गामकेँ हिया कऽ हियासए लगला तँ साँझ-भोर जहिना पहाड़ धुनियाएल बुझाइए तहिना गाम बूझि पड़लैन। मनक विचार उजि-माजि करए लगलैन। मुदा सीमापर आबि अपन घर-परिवारक दर्शन केने बिना दोसर दिस देखब धड़फड़ी हएत। जखन विचारिये कऽ गाम एलौं तखन एना धड़फड़ाएब उचित नइ...।

गामक सीमानकेँ मनक सीमानपर बकरी जकाँ खुटैस जुक्तिनाथ अपना घर दिस डेग उठौलैन...।

हाइये स्कूलमे जखन जुक्तिनाथ पढ़ै छला तहिये पिताक संग पढ़ैए-ले रक्का-टोकी भेलैन। रक्का-टोकीमे मुक्तिनाथ कहलखिन-

"तोरा सनक पढ़ुआसँ हाथ धोलौं।"

जइ मने मुक्तिनाथ कहने हेथिन मुदा जुक्तिनाथकेँ अर्थ लगलैन जे पिता उसरागा जकाँ बूझि रहल छैथ, माने ई जे जहिना आमक गाछीमे उसरागा आमक गाछ होइए जे रहत गाछीएमे मुदा गाछो आ आमो हएत दोसराइतक...।

ई बात जुक्तिनाथक बाल मनमे किए उठितैन जे पिताजी हँसीएमे हँसैबला विचार देलैन। परिवारमे रहि लोककेँ अपन सम्पैत, परिवार-जनक बीच बहैत धारमे बितबऽ पड़ै छै जइसँ कियो भँसबो

करैए, कियो चोरो-नुक्की खेलैए आ कियो पहाड़क नीरसँ निरमौल धारमे अट्हास करैत यात्री बनि धारे-धार समुद्रोमे पहुँचैए...।

ओना पिताक संग जुक्तिनाथकेँ रक्का-टोकी ऐ दुआरे भेलैन जे मुक्तिनाथ कहलखिन-

> "बौआ, परिवारमे जेतबे बुधिक काज छह तेतबे बुधियार बनह। अनेरे किए मनकेँ धोर-मट्ठा भरि दिन केने रहबह।"

पिताक विचार जुक्तिनाथकेँ कटकटा कऽ लगलैन। कट-कटा कऽ ई लगलैन जे भैरसक हाइ स्कूलसँ आगू नइ पढ़बए चाहै छैथ। मुदा पिते किए ने होथि, जँ हम पढ़ऽ चाहब तँ हुनका रोकने थोड़े रूकि जाएब। लगले मन घुमलैन जे ईहो तँ घुमा कऽ जँ कहि देने होथि जे परिवारक जिनगी सुसंस्कृत जिनगी होइए, जखने सुसंस्कृत परिवार बनत तखने संस्कारसँ बच्चा निरमए लगत, जखने संस्कारी बच्चा बनत तखने मनुखक परिवार बनत आ तखने ने संस्कारी समाज बनि देशक निरमान करत...।

मुदा लगले फेर जुक्तिनाथक मन उछैट गेलैन, उछैट ई गेलैन जे जखन पितोजी कहिते छैथ जे 'हाथ धोलौं' तखन हमहूँ किए ने अही लगला-सूरमे परिवारेसँ हाथ धोइ ली।

जुक्तिनाथक मनमे उमकी जनैम उमकऽ लगलैन। उमकैत-उमकैत कहलकैन, पिताजी जे कहलैन- जेतबे बुधिक जरूरत हुअए ओतबे बुधियार बनी, से तमसा कऽ कहलैन आकि परिवारक अगिला सीढ़ीकेँ देखैत कहलैन?

जुक्तिनाथक मन पोखैर-घाटक सीढ़ीपर गलैन, सहर-जमीनपर सँ उठल घाट जेते ऊपर भेल जाइए ओते समटाइत जाइए आ समटा कऽ सीढ़ीक एक बल्ला जकाँ भऽ जाइए मुदा तँए कि निचला सीढ़ीक शक्ति पाबि शक्तिमान नइ रहैए सेहो तँ नहियेँ कहल जेतइ, मुदा

ओकर शक्ति निचला सीढ़ीकेँ शक्ति नइ दइए सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए...।

जुक्तिनाथक मनमे तरे-तर चेतुआ उखम उमैख गेलैन। हिया कऽ देखला तँ माता-पिताक उमेर साठिसँ निच्चे बूझि पड़लैन आ अपना जुआन होइमे पान-सात साल पछुआए...।

मनमे उठलैन- प्रजातांत्रिक शासन बेवस्थामे छी, सभकेँ जीबैक समान अधिकार छै, से घरसँ बाहर सभतैर। अनेरे कोन मगज-मारीक महामारीमे पड़ि अपन जिनगीकेँ खेलौना बनाएब। जखन जवान हएब, परिवार तँ अपने बना लेब। जँ पिता खिसियाएले रहता तँ बौस लेबैन। जखन मालो-जाल बौस मानैए तखन ओ किए ने मानता। तैसंग ईहो तँ लाभक घड़ी ऐछे जे बेटा रहितो जाबे जुआन नै हएब ताबे जँ कोनो दुखो-बेकल पिताकेँ हेतैन तेकर भागियो तँ कियो नहियेँ ने बना सकै छैथ। पिताकेँ किछु हेतैन तँ माए करतैन आ माएकेँ किछु हेतैन तँ पिता करथीन। अखैन हमर कोनो काजो तँ घरमे नहियेँ अछि...।

मुदा लगले जुक्तिनाथक मनमे मोड़ाएल प्रश्न उठल- अखन जे स्कूलक पढ़ाइ छोड़ि देब से केहेन हएत? जेते संगी साथी अछि ओ तँ कहबे करत जे धुर बुड़ि अपना चालिये दहेज छुटलौ!

जेम्हरे जुक्तिनाथ अपन आगूक जिनगी दिस देखैथ तेम्हरे ओझरीमे टाट लागल देखा पड़ैन। मने-मन जखन हाइ स्कूलक शिक्षक दिस तकलैन तँ सभ शिक्षक आने गामक बूझि पड़लैन मुदा एकटा अपन गामोक रहैन।

गामक शिक्षक भेटने जुक्तिनाथकेँ एकटा युक्ति सुझलैन। सुझलैन ई जे देवनाथ काका कक्को छैथ जइसँ परिवारी सेहो भेला आ स्कूलक शिक्षको छैथ, से नइ तँ हुनकेसँ स्कूलो छोड़ैक विचार पुछि लेबैन।

आठ बजे भिनसुरका समए, देवनाथ काका स्कूलक गाड़ी पकड़ै दुआरे घरक गाड़ीकेँ कखनो जुआ पकैड़ तँ कखनो पछुआ पकैड़ दबो-उनार करैथ आ आगूओ ठेलैथ। गाइक थैरक ईंटा सेरियबैत, गहे-गह गोबर पीआ ऊपरसँ ओही गोबरसँ नीपैत, पत्नीकेँ कहलखिन-

"थैरक गोबर सठि जाएत, पहिने पूजा-घर नीपैले लऽ जाउ।"

तही बीच जुक्तिनाथ पहुँच पुछलकैन-

"गुरु काका, अहाँ तँ समुद्री पढ़ने छी, पिताजी उसरागा जकाँ बुझै छैथ, आब ऐ गाममे नइ रहब।"

देवनाथ काकाकेँ जेना ठोरेपर बरी छनाइत रहैन तहिना तरगरेमे बजला-

"धुर बुड़ि! अल्हुआ छह मास माटिक तरमे रहैए से चिन्ते ने करैए आ तोरा जे पिता कहलखुन तेकर आइन-पीड़ा छहे नइ।"

धुपदानीक पजरल ताउमे धुमनक झोंक जहिना एक्केबेर विर्ड़ो जकाँ उड़ि जाइए तहिना देवनाथ कक्काक बात सुनि जुक्तिनाथकेँ भेलैन। तरसाइत पपीहा जकाँ जुक्तिनाथ पुछलखिन-

"काका, उपए की?"

'उपए' सुनि देवनाथ काका बजला-

"पिताजी जे उसरगो बुझै छथुन से उचिते ने बुझै छथुन। ब्रह्माजी तोरा गढ़ि कऽ दूटा हाथ, दूटा पैरक संग माथमे बुधि घोंसिया देने छथुन से तोहर साती हमरा केने हएत। जहिना पिताजी कहलखुन तहिना तोहूँ गामकेँ के कहए जे धरतीएकेँ छोड़ि समुद्रमे जा कऽ पढ़ि आ।"OO

शब्द संख्या- 789, 11 अक्टूबर 2015

राकशे रहि गेलौं

जेठक पुर्णिमा भऽ गेल, मुदा संक्रान्ति लेखे चारि दिन बाँकी अछि। मास दिनसँ बरखा नइ भेने मौसमक रूखिये उलटै-पुलटैए। जे हवा मौधोसँ मीठ होइए ओहो भूखे-पियासे तरैस अगिया नोन-छराहोसँ नोन-छराह भऽ गेल...।

दुखक जिनगी बितौनिहारि कोनो बाला जहिना बिआह भेला पछाति विधिवत् पति-धरम निमाहैले अपनाकेँ संगीक सपना देखैए तहिना गाछीक सिनुरिया सरहीक सिनुराएल मन आ गुलबिया गुलाबखासक ललियाएल मन गाछीक अस्वस्तता निरवहन सेहो करिते अछि...।

पोखैर-इनार हटैक कऽ चटैक गेल, बाधक मटिआर खेतक छाती छहों-छीत भऽ फटि-फटि कऽ अलैग गेल, मुदा मौसमक छाती पघील नइ रहल अछि। समैकेँ जहिना अपन गति-मति छै तहिना लोकोक तँ छइहे।

टहटहौआ रौद रहौ कि झमझमौआ बरखा, आमक मास छी, बगबार मचकी बनेबे करत, मोटगर डारिमे मोटगर झूलाक मचकी लगबे करत, तीन-जने बैस झूलबे करत आ बरहमासाक तेसर मासक

आ चौमासाक जुआनी मासक गीत गेबे करत। आ जँ से नइ भेल तँ जेठुआ माछीक रंगे-रूप की...।

बौआ भैयाक आ अपनो कलम-गाछी एकेठीम अछि। सझिये मचान-खोपड़ी अछि, फैजली आमक गाछक निच्चाँमे मचान-खोपड़ी बनौने छी।

एगारह बजे दिनमे खा-पी कऽ जहिना गाछी हम पहुँचै छी तहिना बौओ भैया पहुँच जाइ छैथ। नमगर-चौड़गर मचान ऐछे दुनू गोरे एके सिरहाने पड़ल-पड़ल आमक गाछीक ओगरवाहियो करै छी आ रंग-रंगक गपो-सप्प तँ करिते छी।

आइ गाछीक सीमानपर एकेबेर दुनू गोरे पहुँचलौं। ओना घर दुनू गोरेक लगेमे अछि मुदा बीचमे प्रधानमंत्री सड़क योजनाक सड़क बनने, गामक रस्ते दुनू गोरेक बदैल गेल अछि। जहिना गाछी-बिरछी तहिना गामक टोल-पड़ोस। जाबे सड़क नइ बनल छल, गाड़ी-सवारीक एते दौड़ नइ छल, दुनू गोरे बेसी काल एकेठाम रहितो छेलौं।

बौआ भैयापर नजैर पड़िते बूझि पड़ल जे कोनो बेथे बौआ भैयाक मन टुटि कऽ जेना केतौ लसैक गेल छैन। मुदा बच्चेसँ दुनू गोरे एकठाम रहलौं, जहिना बौआ भैयाकेँ हम चिन्है छिऐन तहिना ओहो हमरा चिन्है छैथ, तँए मन खसैक माने खाली दुखे-बेथा नइ होइ छै, करमो होइ छै। संगे दुनू गोरे बी.ए. पास केने रही। संयोग ई रहल जे वेचारा अपन नथिया निकालि लोअर-प्राइमरी स्कूलमे नोकरी केलैन आ हम अपन जिद्द धेने रहलौं जे छमतानुसार काज करी।

बातो विचारैबला अछि जे जे बी.ए. पास अछि ओ हाइ स्कूलक विद्यार्थीकेँ पढ़ा सकैए, तैठाम जँ लोअर प्राइमरी स्कूलमे जा पढ़ाएत तखन मिडिल पास आकि ऐट-नाइन पास की करता?

मनमे उठि गेल रहए जे कोनो गम्भीर विचार बौआ भैयाक मनकेँ दबने छैन, तँए खसल बूझि पड़ै छैथ। तहूमे अनका जकाँ ने

हुनके मनमे छैन जे आगू भऽ कऽ केना टोकब आ हमरे मनमे जे कहियो ने उठल से केना उठत।

गामक हँसोरमे बौआ भैयाक गिनती छैन, जे बात गामक सभ बुझै छथिन, हमहूँ बुझै छी आ शिक्षक-मण्डली सेहो बुझै छैन आ जात-बरियात पुरनिहार तँ जनिते छैन जे जइ बरियातीमे बौआ भैया पहुँचला, ओइ बरियातीक सए-सबा-सए रसगुल्लाक पाचक बौआ भैयाक गप-सप्प छिऐन। हँसबैत-हँसबैत पचा देता। जहिना घूस उपहारक नाओंपर पचि जाइए।

खसल मनकेँ उठबैत बौआ भैया बजला-

"राकशक राकशे रहि गेलौं!"

बौआ भैया की बजला, से बुझबे ने केलौं- की राकशक राकशे रहि गेलौं? मुदा लगले धिया-पुताक मुँहक एकटा बात मन पड़ि गेल। मन पड़ि गेल जे पहिने गाछी सभमे राकश सभकेँ देखै छेलिऐ। ठाढ़ो हुअए आ चलबो करए, दौगबो करए, भुक-भुको करए। मुदा ओहो तँ ओही दिनसँ समाप्त भऽ गेल जइ दिनसँ लोक अछियामे खोंरनाठी जरबऽ लगल।

मन भेल, बौए भैयासँ पुछि लिऐन मुदा पुरना बात केना...; तँए चुपे रहलौं। मुदा बौआ भैया ओइ शिकारी जकाँ तीर फेंक हमरा पाछूसँ हियाबए लगला जे केते दूरक शिकार पकैड़ पेलिऐन। मने-मन तरतम्य करए लगला जे केहेन उत्तर अबैए।

अकबकाएल आगू बढ़ैत मचान लग पहुँच गेलौं।

बौआ भैयाक गम्भीर नजैर देखि अपन सेवकाइ अनिवार्य बुझाएल। तहूमे बौआ भैयाक बात बुझबे ने केलौं सेहो तँ हुनकेसँ भेटत तँए आगतो-भागत अनिवार्य तँ ऐछे।

बौआ भैया निच्चेमे ठाढ़ रहला, आ अपने आगू बढ़ि मचानक ओछाइन ठीक केलौं।

ओछाइनपर पड़ि सिरमापर मुड़ी सेरिऐबिते रहैथ तखने मुहसँ खसलैन-

"एह! केतए गेल ओ दिन?"

बौआ भैयाक बात अनसोंहात जकाँ लगल। बाजि रहल छैथ आकि बकि रहल छैथ? किछु फुरबे ने करए। तखन तँ भेल जे जहिना मूसक नाङ्गैर पकैड़ गणेशजी खेलाइ छला तहिना हमहूँ खेली...।

टोकलयैन-

"भैया, अहाँ बजैत जाइ छी, हम बुझबे ने करै छी।"

बौआ भैयाक मनमे जेना गुरुत्व जगलैन। डेढ़ इंचक हँसी हँसैत कहलैन-

"सुधीर, आगू देखि पाछूक सुमार अबैए।"

बौआ भैयाक बात सुनि-सुनि छगुन्तामे पड़ल जाइत रही मुदा किछु भाँजे ने पबैत रही, जे एना किए बजि रहल छैथ...।

...तखन उपए? हँ एकटा उपए तँ ऐछे जे भुतलग्गु जकाँ बकैले छोड़ि दिऐन। सएह केलौं अपन मुँह सुइया-डोरासँ सीब, दुनू कानकेँ खोलि, टेप जकाँ आगूमे रखि देलिऐन।

पुतोहुक दुतकार बौआ भैयाक मन-मिजाजिकेँ हौड़ देने छेलैन। अपना काने सुनलैन। पाँच बर्खक पोताकेँ पुतोहु ठोकले मुहेँ कहलखिन-

"बाबासँ पढ़ऽ नै जो। ओ पुरना पाठ पढ़ा, पछुआ देथुन।"

पुतोहुक बात सुनि बौआ भैया छगुन्तामे पड़ि मने-मन सोचि रहल छैथ, सत्तैर बर्खक पूर्ण जिनगी जिनीहारक कोनो मोले नै? की हम आमक गाछीक राकश छी?

पुतोहुक विचार बौआ भैयाकेँ छातीमे लगल टहकैत रहैन। मुदा दुख-सुख तँ मनक खेल छी, नइ कि मन। अहिना अबैत-जाइत रहै छै। मुदा जेकर जिनगी हँसोरक रहल ओहो तँ लगले नहियेँ मेटाएब। बजला-

"की सासुर छल आ की पत्नी छेली!"

बौआ भैया जे बजला ओइ बीचमे किछु बाजि टाँग नइ अड़ेलौं। तँए एकहरफी बजैत रहैथ। फेर बजला-

"देहा-देही सम्बन्ध होइए। सासुर छल, जहिना सासुकेँ सुरजा दोकानक लालमोहन नीक लगै छैन, तहिना बुड़हाकेँ कालापानी पुरना छलिया आ सारि-सरहोजिकेँ अण्डाएल रौह। भऽ तँ गेल एते पुरती भऽ गेल सासुरक मान-दान बढ़ि गेल। आँगन-दरबज्जासँ उठि-उठि रस्ता तकैत रहता जे पहुनमा केतए ढोंरियाएल अछि।"

'मान-दान' मुहसँ खसिते जेना बौआ भैयाक बोलीक पाश बदैल गेलैन। दोहरबैत बजला-

"विद्यालयमे किछु गलती अपनो भेल। सोझे पढ़बै पाछू रहि गेलौं, अपने किछु पढ़ि नै पेलौं। जैठाम सए-पचास बाल-बोधकेँ पढ़ा रहल छेलौं, तैठाम ओकरा पढ़ब छूटि गेल, बालो बोध नइ भेल!"

बौआ भायकेँ अपसोच करैत देखि कहलयैन-

"अनेरे बौआ भैया, चिन्ता करै छी?"

हँसैत बौआ भैया बजला-

“राकशो की सदिकाल कनबे करैए आकि हँसबो करैए।
क्रन्दन-कोलाहले बीच ने हल बनि हलकबो करैए।”

बजैक सूरमे बौआ भैया बाजि गेला, मुदा बूझि पड़ल जे कोनो नमहर पाथर कलेजाकेँ दबने छैन।❍❍

शब्द संख्या- 963, 12 अक्टूबर 2015

निनिया देवीक आराधना

आसिन मासक सोल्हम दिनक परीव, आइए नवरात्राक कलश-स्थापनो हएत। ओना सालमे चारि खेप नवरात्रा होइए, जेकरा चतुरमासी कहल जाइए। ओना आसिनक नवरात्राक अपन अलग महत छै। महत्तो केना नइ रहत जिनगीक आसा-बाट पकड़ैक कलश-स्थापन छी किने।

ओना आसिनसँ लगले सटल मास कातिकक सोल्हम दिनक परीव-परवेबक रूपमे आ गोवरधन पूजाक रूपमे गोबरक बखार बना गोधन-गजधन इत्यादिक पूजो होइते अछि। मुदा ओ परीवक पावैन बीतल अमवसियाक साँझमे लक्ष्मीक पूजा आ रातिमे कालीक पूजा होएत।

सालक चारू नवरात्राक अपन वीध-विधान छै, जे एक-दोसरमे सम्मो अवस्थामे अछि आ बिसम्मो अवस्थामे अछि जे सोभाविको अछि। रहबो केना ने करत, जे बरसाती फूल आसिनमे अपन जुआनी पकैड़ नचैए ओ तँ माघ अबैत पतझाड़क रूपमे फूलझाड़ भाइए जाइए, तखन एक्के पुष्प-दलसँ पूजब कठिन हेबे करत किने।

भक्तमय संसारमे निनिया देवीक पूजामे सभ लीन। दुनियाँ लीन, गाम लीन, परिवार लीन, लोक लीन...। लेनिहारेसँ दुनियाँ भरल अछि। देनिहार मात्र एक- निनिया देवी, शक्तिशालिनी देवी।

अदौसँ जहिना घर-परिवारसँ देस-कोस धरिक लोक लड़ाइ करैत आबि रहल अछि तहिना देवियो-देवी आ देवो-देवता तँ लड़ाइ करिते आबि रहला अछि। तहिना पनचैतियो सभ दिनसँ यएह होइत रहल जे जे जेते शक्तिशालिनी आ शक्तिशाली ओ ओते सिरचढ़ बनि सिर चढ़ल।

ओना गाममे बहुतो देवियो स्थान अछि आ देवो स्थान, मुदा हूबा-मनसूबामे कम-बेसी तँ ऐछे, से गामोक लोक बुझिते छैथ। मुदा केतौ किछु हौउ, निनिया देवी अपन समयानुकूल रूप बदलैत अखनो सभसँ शालिनी देवीक स्थानमे छैथे। रहबो केना ने करती, एहेन आनन्द-दायिनी देवी दुनियाँमे के अछि जेकरासँ प्राप्त कोनो आनन्दसँ कम आनन्द निनिया देवीक आराधनामे भेटैत हुअए। दुनियोँसँ मुक्त आ जिनगियोक हड़हड़-खटखटसँ मुक्त...।

..तेतबे नै, दिनमे पूजा करी आकि रातिमे, साँझमे करी आकि भोरमे तइले ने केतौ कोनो नियम-आदेशक कोनो झंझट आ ने स्थान-प्रवेश करैमे केतौ कपाट लागल अछि। जेहेन मन तेहेन तँ भेटबे करैए तइमे की निनिया देवी कोनो दूजा-भाव करैत दइ छथिन। ओ तँ मनसा गुण फल सभकेँ दइते छथिन। जेहेन पुरुख रहब तेहेन पुरखौट भेटबे करत...।

काल्हि साँझूए पहर गामक दुर्गा स्थानमे भगवतीकेँ नौत दैत औझुका कलशक स्थापनाक सभ जुति-भाँति पूजा कमिटिक बीच निर्णए भऽ गेल। काजक बन्हुआ श्याम काका, समैसँ सभ काज करैत चारि बजे भोरे उठि परिवारजनकेँ जगबऽ लगला। केकरो फूल तोड़ैले, केकरो आँगन-घर नीपैले, केकरो कलशक ओरियान करैले इत्यादि-इत्यादि काजकेँ नाओंमे बान्हि-बान्हि परिवारमे छिड़ियबऽ लगला।

छिड़ियेबो केना ने करितैथ, जहिना अन्न-अन्नमे खेनिहारक नाओं लिखल अछि तहिना ने काजो आ पूजो-पाठक...। बेटा-पुतोहु, पोता-पोतीसँ भरल श्याम कक्काक नमहर परिवारो छैन्हें।

ओछाइनपर नीन तोड़ि श्यामा काकी श्याम काकापर तीर छोड़ैले मने-मन विचारि रहल छेली। विचारक अनुकूल परिस्थितियो छेलैन। एक तँ आसिन मासक भोर, तैपर पूर्बाक लहकी भरल अमवसियाक रातिक सिहियाएल संसार...।

सुरूजक लाली पूबसँ जगि रहल छल मुदा फरीच नइ भेल रहए। दिनका काज दिनमे हएत आ रौतुका काज रातिमे। अखन तँ रातिये अछि तखन किए श्याम काका ठेलियबै छथिन?

..श्यामा काकीक मनमे उठलैन जे समधानि कऽ कहिऐन, मुदा तरङ्ल मनमे तरेगनक इजोत जकाँ उठलैन- आइ आसिनक नवरात्राक कलश-स्थापन छी, भोरे-भोर कहा-कही करब उचित नइ...।

मुदा लगलै मन लहैस गेलैन। लहैसते उठलैन, कहू जे के एहेन हएत जे परिवारजनकेँ सुखमय, आनन्दमय समए बितबैत नइ देखए चाहत?

एक तँ आसिनक मद-भरल मासक भोर, तैपर उमसाएल मनकेँ पूर्बाक लहकी मोहैन करैए, तेकरा किए श्याम काका अनरोखे नष्ट करए चाहै छथिन। परिवारजनक सम्बन्ध देहा-देही, बेकता-बेकती अछि। ओना सम्बन्धकेँ सभ रंगक विचारक पीठिपोसको सभ परिवारमे होइते अछि। एक दिस पतिक सम्बन्धसँ पत्नी तँ दोसर दिस सन्तानक सम्बन्धसँ माए, दादी, नानी इत्यादि...। सबहक अपन-अपन धरम-करम अछि।

मझधारमे पड़ल श्यामा काकीक मन नाह जकाँ डगमगाए लगलैन। डगमगाइत मन आड़ा लगिते बमैछ गेलैन। बमछैत पतिकेँ कहलखिन-

"भोरे-भोर एना किए अर्ड़ाइ छी?"

श्यामा काकीक बात श्याम कक्काक मनकेँ बेसी छुलकैन नइ मुदा कानमे पहुँच घुड़घुड़ा देलकैन। कानकेँ घुड़घुड़ाइत देखि डोपामाइन मनकेँ धड़धड़ा देलकैन। धड़धड़ाइ मनमे विचार उठलैन- परिवारक तँ सिरजन अपने दुनू बेकती छी, तखन भोरे-भोर लोहैछ कऽ किए जे विचारेसँ किए ने कहिऐन।

तैबीच श्यामो काकी घरसँ निकैल ओसारपर एली। श्याम काका हाथोक इशारा आ मुहोँसँ कहलखिन-

"एम्हर आउ।"

लगमे अबिते काकीक मन जेना अस्सी मन पानिक बीच पड़ि गेल होनि, तहिना बजली-

"आइ कलस्थापन छी किने?"

श्याम काका-

"तँए ने भोरे-भोरे सभकेँ उठि-उठि संकल्पित हुअ कहै छिऐ।"

"दिन केतौ भागल जाइए?"

"से ते नइ भागल जाइए मुदा रातिक खेहारसँ तँ भागिते अछि किने?"

पतिक बात सुनि श्यामा काकी चुप भऽ गेली।OO

शब्द संख्या- 684, 13 अक्टूबर 2015

बताहे बताह बनौलक

माघ मासक अमवसियाक भोर। आइए माघी नवरात्राक कलश-स्थापन सेहो होएत...।

काल्हि साँझूपहर आर्यवीर बाबा बजार-ऑफिसक काज करैत साढ़े सात बजेमे घरपर एला। ओना माघक साढ़े साते बजे छी, जेकरा जेठुआ हिसावे पहिल साँझ आ भदवरियामे दोसर साँझ चाहे कतिका हिसावे तेसर साँझ कहल जाएत मुदा, माघक हिसावे तँ राति भाइए गेल अछि।

अपन रूटिंगक हिसावे आर्यवीर बाबा अबैबला काल्हिक ओते ओरियान आइए कऽ लइ छैथ, जतेकसँ अगियासी चलतैन। अपन नित-कर्मक किछु काज पछुआएल रहैन तँए नजैर कौल्हुका दिस नइ बढ़लैन।

एक तँ रस्ताक जराएल दोसर अनिवार्य काज पछुआएल रहने अगियासीक ओरियान परिवारोजन नइ केने रहैन। किए ने केने रहैन तेकर अनेको कारण अछि मुदा से सभ नइ, कनसोह नइ रहने छुटि गेलैन। कनसोह भेल जेकर भार कन्हापर अछि। माने ई जे चारि गोरे चारि रंगक काज करै छी, जइमे कोनो एहेन काज अछि जे परिवारक जिनगी-ले अनिवार्य अछि जे नइ केने कष्ट हएत, परेशानी हएत।

ओहन काजपर नजैर नइ दऽ अपन जिम्मेक काज जे अनिवार्य नहियोँ अछि ओ कऽ लेब आ अनिवार्यकेँ छोड़ि देब...।

एक तँ ओहुना भोरक अगियास[1] नइ पजरल तँ दिनक सृजन बाधित हएत, जखने सृजन बाधित हएत तखने अगियास बिनु पजरनौं निष्काम रहत।

भोर भऽ गेल रहए। ओना भोरो-भोर केते रंगक अछि। कोनो पक्षीक अध-रतिया भोर होइ छै आ कोनोकेँ दिन-उगिया मुदा से सभ नइ, घड़ीक हिसावे आकि मोबाइलिक हिसावे चाहे रेडियोक हिसावे साढ़े पाँच बजि गेल रहए मुदा, लगै राति जकाँ। राति जकाँ लगैक कारण रहै पैछला मास दिनक शीतलहरी, जइसँ ओस पाला बनि सघन भेल। बूझि पड़ै जेना अपनो हाथ-पएर अपन आँखि नइ देखि पबैए तैपर सँ हिमांचल जकाँ कनकनी...।

आने दिन जकाँ आर्यवीर बाबा घूरक जगह लग पहुँचला। घूरक केतौ पता नइ। सभ दिन बाबा अपने ओहन अगियासीक ओरियान कऽ लइ छैथ जेहेनक खगता रहै छैन। घूर नइ होइक कारण रहैन ओइ दिस सुधिये बुधि ने गेल रहैन। परिवारोजनक सभ अपने काज भरिमे समटा कऽ रहि गेल रहैन।

ओछाइनपर सँ उठि आर्यवीर बाबा सलाइ नेने घूर लग ठाढ़ रहैथ, जाड़े देह सिहरैत रहैन, मन भुटकैत आ ठोर कँपैत रहैन। घूर नइ देखि मनमे एक्केबेर जेना आगि पजैर गेलैन। आगि ई पजरलैन जे जइ परिवारजनकेँ आइ-सँ-काल्हि जोड़ैक लूरि नइ अछि, जेकरा ई नइ अछि जे रस्तामे केते बाट-घाट पड़ैए, जेकरा डूमा घाट आ डूमा बाटक होश नइ छै, ओ केना उगा घाट आ उगा बाटक तुलसीपात जकाँ कंचन बनि चलि सकत!

बताह जकाँ जोरसँ आर्यवीर बाबा चितकार मारलैन-

[1] आगूक आस

“ई घर रहैबला अछि! जँ रहौ चाहब तँ जीब कए दिन?”

घरे-घर परिवारजन सीरकक तरमे दाबल। किए किछु कियो बाजत। गबदी मारि सभ जाड़क मस्तीमे मस्त। नहेला पछाति जहिना कियो ठोर पटपटबैत हनुमान चलीसा पढ़ैए- ‘महावीर विक्रम बजरंगी... ।’ तहिना ठोर पटपटबैत आर्यवीर बाबा दोहरा कऽ बजला-

“ई घर छी आकि बतहाक बोन छी!”

‘बताहक बोन’ सुनि एगारह बर्खक पोता जे टी.बी.मे रामदेवकेँ व्यायाम करैत देखि अपनो मने-मन करैत रहए... ।

बाबाक बड़बड़ाएब सुनि कोठरीसँ निकैल, लगमे आबि कहलकैन-

“बाबा, अहाँ अनेरे किए चिन्ता करै छी?”

विलासक बात सुनि आर्यवीर बाबाकेँ हनुमानजी जकाँ रूइयाँ-रूइयाँ ठाढ़ भऽ गेलैन। तरे-तर मन बमछऽ लगलैन। बमछैत बजला-

“तेहेन ने घरक लोक भंगबताह अछि जे बताह बनौने बिना नइ रहत।”

ओना विलास कौजेमे पढ़ैए मुदा बच्चेसँ सभ दिन प्रिंसिपलेक बीच शिक्षा पौलक, अखनो पबैए। माने ई जे जखने नर्सरीमे नाओं लिखौलक तहूठाम प्रिंसिपले रहथिन आ कौलेजमे तँ सहजे सभ दिने रहला अछि।

प्रिंसिपलक बीच रहने विलास कहियो हेडमास्टर आकि आचार्यजी आकि पण्डीजीसँ पढ़ने नइ। ओना विलास पढ़ैमे चञ्सगर तेहेन अछि जे केहनो गणितकेँ कैलकुलेटरमे मिनटो नइ सेकेण्डेमे सोझरा लइए। विलास कहलकैन-

“अहाँकेँ कथीक एते दुख होइए, अनेरे चिन्तासँ बताह भेल छी।”❍❍

शब्द संख्या- 577, 15 अक्टूबर 2015

धोरवा

पछिम दिस सुर्ज लटैक गेला मुदा डुमल नइ छला। ओना सुर्जक डुम्बोक बेर सभ मास आ सभ मौसममे अलग-अलग होइए। कोनो मासमे डुमैसँ पहिने थरथरी-कँपकपी आपनो आबि जाइ छैन आ लोकोकेँ अबिते छै। मुदा एकर माने ईहो तँ नहियेँ हएत जे सभ दिन आ सभ मास आकि सभ मौसममे अहिना होइए। एहनो तँ समए आकि मौसम ऐछे जइमे डुमैयोकाल ओहन उष्मा आकि प्रखरता रहिते छैन जेहेन बालपन-सँ-जुआनपन धरि रहलैन...।

..से नइ, शरदक मास रहने सुर्जमे केतौ ने वादल घोंसियाएल आ ने रंग-रूपमे कोनो कमी आएल। मुदा तँए कि ओसक आगमन आकि जाड़क आगमन नइ भेल सहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए...।

दिन अछैते बाध दिससँ आएले रही कि मनीष भाय पहुँचला।

पत्नी चाह नेने आबि गेल रहैथ मुदा एके कप चाह, पत्नीक हाथसँ कप लैत मनीष भाइक हाथमे पकड़बैत पत्नीकेँ कहलयैन-

"आरो एक गिलास चाह नेने आउ।"

पत्नी चाह आनए आँगन गेली, मुदा मनीष भाय हाथमे कप रखने ने किछु बाजैथ आ ने चाह मुँहमे लगबैथ। जे सोभाविको अछि। गाम-घरमे लोकक चूल्हिपर चाहे केते बनैए। कोलकाताक

होटल नइ ने छिऐ जे सदिखन खदकैते रहैए। मुदा सम्बन्धो तँ कपे भरिमे ने निमाहऽ पड़ै छैन...।

..दोसर कपमे चाह नेने पत्नी पहुँचली। हाथमे चाह लैत मनीष भायकेँ कहलयैन-

"किए चाह बागने छी, हमरो तँ आबिये गेल।"

पत्नी चोटे घूमि आँगन चलि गेली। एक घोंट चाह पीब मनीष भाय कहलैन-

"श्याम, गुरु काका ऐठाम चलह।"

मनीष भाय खोलबे ने केलैन जे कोन काजे आकि किए चलह। ओना मनीष भायपर सभसँ बेसी बिसवास- गामक लोकक अपेक्षा- अछि। एहेन लोक जँ बारह बजे दिन आकि बारह बजे रातियो जँ केतौ चलैले कहता तँ मिसियो भरि अन्देशा नै हएत। तहूमे गुरु काका ऐठामक बात छी। मुदा समैयोक तँ अपन गतिविधि छै। एकरो तँ नहियेँ नकारल जा सकैए जे कोनो बहन्ने लोक लोककेँ ठकि पैघ-पैघ अपराधमे ओझरा जइ छै...।

सामंजस्य करैत मनीष भायकेँ कहलयैन-

"अहूँ बड़ औगताह छी, पहिने चाह पीबू तखन पान खाएब, पछाति जेतए जाइक मन हएत तेतए चलब।"

दुनू गोरे चाह पीलौं। पान खेलौं। नवका डिब्बाक पान सए नम्बर जरदा-पत्ती, मुँहमे दइते पानकेँ फुला देलक। मुँहक पान फुलाइते मनो फुला गेल। फुलल मने मनीष भाय बजला-

"गुरु काका अखन कष्टमे पड़ि गेल छैथ।"

पनरह दिनसँ ओम्हर नइ गेल रही तँए गुरु काकासँ भेँट नइ भेल छल। कष्ट सुनि मन हहैर-हहैर खसऽ लगल। मुदा सम्हरैत पुछलयैन-

"केहेन कष्टमे पड़ि गेल छैथ?"

ओना मनीषो झँपले-तोपल बजला। किएक तँ कष्टो तँ केते रंगक अछि, एहनो कष्ट तँ ऐछे जे खेबाकाल जँ तरकारी अनोन कि मधनोन रहल, तहूसँ कष्ट होइए। जखन कि केते लोक एहनो तँ छैथे जे नोन खाइते ने छैथ।

कुरसीपर सँ उठैत मनीष भाय बजला-

"चलह रस्ते-रस्ते गपो करैत चलब आ भेँटो कऽ लेबैन।"

दुनू गोरे गप-सप्प करैत गुरु काका ऐठाम पहुँचलौं।

ओछाइनपर पड़ल गुरु काकी चद्दैर ओढ़ने रहैथ आ गुरु काका सिरमा लग बैसल रहथिन। हमरा दुनू गोरेकेँ देखिते गुरु काका सोर पाड़ैत कहलैन-

"ऐम्हरे आबह।"

लगमे पहुँचते काकीकेँ कहलयैन-

"गुरु काकी, गोड़ लगै छी।"

गोड़ लगाब सुनि गुरु काकी चद्दैर समेट ओढ़ि बैसैत असीरवाद दैत बजली-

"भगवान हमरो ओरुदा तोरे देथुन जइसँ दनदनाइत चलैत रहबह।"

मनमे भेल जे आब हिनका औरुदे केते छैन जे अखनो बाँटि रहली अछि। मुदा लगले धक् दऽ मन पड़ल जे आइए नइ सभ दिने एहने असिरवाद गुरु काकी दैत एली अछि। दुनू गोरे- माने हमहूँ आ मनीषो भाय- बैसलौं। बैसिते गुरु काकाकेँ मनीष भाय पुछलखिन-

"काका, केहेन समए-साल अछि?"

गुरु काका मनीष भाइक मुँह दिस देखैत कहलखिन-

"की समए-साल रहत...!

पत्नी दिस आँखि घुमबैत-

..देखहुन ने, कहै छैथ जे हमरा कोनो दवाइ-विर्ड़ो नइ करू। अहाँ अछैत जँ मरि जाएब तखन ने अहाँक मन निसकलुष रहत, जइसँ सए बरख नहियोँ पुरने शतीक पात्र हएब।"

गुरु कक्काक बात मनीष भाइक मनमे धुरियाए लगलैन, मुदा हमरा हँसी लगि गेल। कहू जे आन बुढ़ानुसकेँ मरैक डर होइ छै, जइसँ पतियो आ बेटो-पुतोहुकेँ गरियबैत रहैए जे दवाइ-वीड़ो छोड़ि सभ गरगोटिया दऽ कऽ मारऽ चाहैए आ ऐठाम उनटे देखै छी! मुदा हँसी कम करैत मुस्की भरैत रही, बाजी किछु ने।

ओना मनीष भायकेँ देखिऐन जे कखनो मुँह विदैक जाइ छैन आ कखनो सोझ-साझ भऽ जाइ छैन। मुदा हमरा केटली आ कि कोनो वर्तनमे खौलैत पानि जकाँ जे ऊपरका उधियाइत रहैए मुदा निचला जरैत ऊपरकाक दाबसँ तेते दबल रहैए जे सगबगाइयो ने पबैए, तहिना कण्ठसँ ऊपर तेते खुशी नचैत रहए जे हृदयक बातकेँ दाबि देने रहए। हुअए जे भैरसक हमरे सन लोक-ले ने लोक बजैए 'केदैन हँसल किदैन देखि...।'

मुदा फेर मन कहलक होशियार लग बैसब वएह होशियारी भेल जे सुनि-सुनि बुझैक परियास करी।

एक दिस कोनो काजक मूर्तिरूप अछि आ दोसर दिस खढ़-माटिसँ गढ़ल, तैठाम देखिनिहारोकेँ तँ किछु दायित्व बैने जाइ छै, तँए रही तँ चुपचाप बैसल मुदा मकैक लाबा जकाँ कखनो-कखनो मन फुटि-फुटि लाबा बनि खापैड़सँ उड़िये जाइत रहए। जे निच्चाँ खसि पड़ै तेकरा उठाएबो तँ कठिन ऐछे। एक दिस अपने गरम रहने आँगुर

पकैक डर रहैए तँ दोसर दिस लगले सरेने जाबे धानी-बनत ताबे ओ गरमेबे करत...।

हमरा दुनू गोरेकेँ सोझहामे देखि गुरु काकीक नरसिंह जगि गेलैन। तहूमे ओछाइनपर सँ उठि कऽ बैस गेल छेली। झँपटैत गुरु काकाकेँ झपैट बजली-

“आइए नै सभ दिनसँ पुरुख नारीपर अनबिसवास करैत आएल अछि आ अखनो करैए।”

गुरु काकीक असल बात पेटेमे रहैन मुदा झपट्टे देखि गुरु काका सहैम गेला। सहमबो केना ने करितैथ, पुरुखक पुरुखत्वक प्रश्न अछि किने। लगक संगी अपन पत्नियोँ जँ दोसर पुरुखक संग ठैठ कऽ हँसै छैथ, ऐ नारीत्वकेँ नइ मानि, शंकालु नजैरे देखै छैथ। की पुरुखक किरदानी नारी नै देखि रहली अछि जे ओ सौतीनक जिनगी जीबह आ पुरुख छुट्टा खेलाइत रहह।

ओना गुरुकाका आ गुरु काकीक रमझौआ नीक लगल। मुदा मन तँ गुरु काकी आ गुरु कक्काक उमेर दिस देखैत रहए। ओना अखनो दुनूक मनमे आत्म बिसवास छैन्हें जे गलि-पति नइ मरब। मुदा झखड़ल जिनगी देखि मन कलैप कऽ कलैश गेल।

पुछलयैन-

“काका, केते उमेर भेल हएत?”

उमेर सुनि गुरु काका बजला-

“पनचानबे बरख चलि रहल अछि।”

‘पनचानबे’ सुनि मनमे हरियरका धुरा उड़ऽ लगल। मुदा केना पुछितिऐन जे आब केते दिन जीब। तैबीच गुरुओ काकीक मन

लुसफुसाइत देखलयैन। बूझि पड़ल जेना किछु बजऽ चाहै छैथ। मुदा प्रतीक्षा करैत रहैथ जे हमरो पूछ हएत तखने ने...।

गुरु काकीक लुसफुसाइत मुँह देखि पुछलयैन-

"काकी, अहाँक उमेर केते भेल हएत?"

ले बलैया! पुछलयैन असथिरसँ आ ओ बाँझ जकाँ झपाटा मारि बजली-

"स्त्रीगणक कोनो मोल छै। दू बरख जँ पुरुखसँ बेसियो रहत तैयो दू बरख घटाइए कऽ लोक बजैए।"

दोहरा कऽ की पुछितिऐन। अपन पशे बदैल लेलौं। गुरु काकाकेँ पुछलयैन-

"काकी जँ मरऽ चाहै छैथ तँ छोड़ि दियौन।"

काकीक बात सुनि काका सहैम गेला। जेना पाछू उनैट अपन जिनगीक सर्वे करए लगला। बीचमे मनीष भाइक मुँह सेहो किछु बजैले चटपटाइत रहैन, मुदा ओ अगिया प्रश्नोत्तरक प्रतिक्षामे मुँह बन्न केने रहला। सोचैत विचारैत गुरु काका बड़ीखानपर बजला-

"बौआ, दुनू गोरे बेटे-भातीज भेलह। जइ दिन बेटा-पुतोहु परदेशक रस्ता पकैड़ कहलक जे अहूँ दुनू गोरे (माने माता-पिता) संगे चलू। मुदा गामक माटि-पानिपर कएल गेल सेवाक जे फल देखैत एलौं ओ सिनेह बेटा-पुतोहुक सिनेहसँ बेसी बूझि पड़ल। अपन जिनगीक कोनो शंके ने अछि, तखन किए केतौ जैतौं। मुदा किछु आवश्यक काज धोखा-धोखीमे छुटि गेल। ओतबे चिन्ता अछि!"

गुरु कक्काक बात सुनि मनीष भाय कहलखिन-

"काका, अखन जाए दिअ। काल्हि फेर आएब।"

गुरु काका कहलखिन-

“भरोसे-भरोसी ने दुनियाँ चलैए।”❍❍

शब्द संख्या- 1169, 17 अक्टूबर 2015

बटेसर काका

Till 22nd October 2015...